कपिल केवली

लेखक: – डा. पदमचन्द्र जी म. सा.

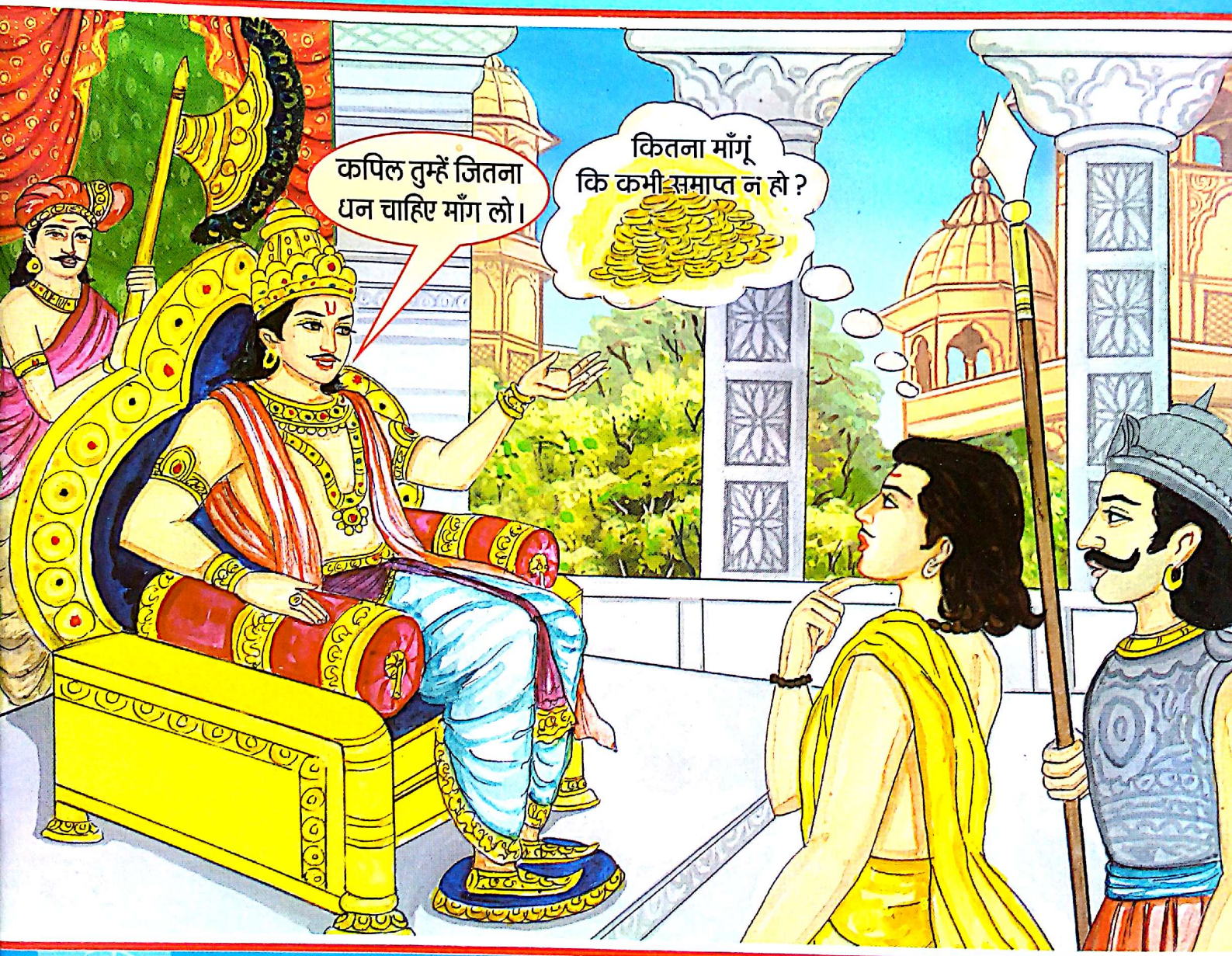

कपिल केवली जीवन चरित्र

बड़ी साधु वन्दना सचित्र कथायें भाग २

Scanned by CamScanner

कपिल केवली

कविकुल शिरोमणि एकभवावतारी आचार्य सम्राट् पूज्य श्री जयमल जी म. सा. की एक कालजयी रचना है, **बड़ी साधु वन्दना।** इस रचना में भक्ति, वैराग्य और संयम की त्रिवेणी का अद्भुत प्रवाह है। जो भी पढ़ता है, उसका हृदय भाव-विभोर होकर वैराग्य पूर्ण भक्ति की हिलोरों से तरंगायमान हो जाता है।

प्रस्तुत रचना में सैकड़ों उदाहरण हैं। जिनमें संयम, तप, तितिक्षा, वीतरागता, निर्मल ध्यान-धारणा आदि की हृदयस्पर्शी प्रेरणाएँ भरी हैं। एक-एक गाथा में उदाहरणों के मोतियों की लड़ी गुंथी हुई है। जिसे पढ़ते-पढ़ते साधक का मन परम शांत रस में निमग्न हो जाता है।

साधु वन्दना के उन उदाहरणों को बाल-वृद्ध, महिला आदि सभी के लिए पठनीय और रुचिकर बनाने की भावना से **विद्वद्मनीषी डॉ. पद्मचन्द्र जी म.** ने बहुत ही आकर्षक शैली में चित्रमय प्रस्तुत कर जन सामान्य पर बहुत उपकार किया है। साधु वन्दना की सचित्र कथाओं के क्रम में अब प्रस्तुत है **'कपिल केवली'** की कथा।

कपिल मुनि के चरित्र की प्रेरणा बहुत ही रोचक और भावपूर्ण है। **'दो मासा'** सोने के लिए रातभर भ्रमण करने वाला एक ब्राह्मण युवक जब राजा द्वारा वरदान प्राप्त करता है कि जितना धन चाहिए उतना माँग ले, तो उसकी विचारधारा एकाएक मोड़ खाती है। लोभ की अंधेरी गली में भटकते-भटकते एक प्रकाश किरण चमक उठती है। कपिल को मार्ग सूझता है—''कपिल ! तू कहाँ से कहाँ भटक गया ? 'दो मासा' सोने की जगह करोड़ों-अरबों की धन सम्पत्ति मिल रही है, फिर भी तेरी तृष्णा की आग नहीं बुझी।''

इस उदान्त चिन्तन से कपिल की आंतरिक चेतना जगती है और वह लोभ के बीहड़ से निकलकर संतोष के नन्दनवन में पहुँच जाता है और राजा से कहता है—''अब मुझे कुछ भी नहीं चाहिए। जो चाहिए था वह संतोष रूपी परम धन मिल गया।''

ज्ञान और वैराग्य से प्रकाशमान कपिल सीधा संयम के महा पथ पर बढ़ जाता है और केवल ज्ञान प्राप्त कर सर्वकर्म मुक्त हो जाता है।

—उपाध्याय पार्श्वचंद्र मुनि

❑ लेखक : डॉ पदमचन्द्र जी म. सा.

❑ सम्पादक : संजय सुराना

❑ चित्रांकन : सत्यप्रकाश तिवारी

❑ प्रथमावृत्ति : पाँच हजार प्रतियाँ

❑ मूल्य : पच्चीस रूपये मात्र

• प्रकाशक : •

श्री जयमल जैन पार्श्व-पद्मोदय फाउण्डेशन, चेन्नई

78, मिल्लर्स रोड, किलपॉक, चेन्नई-600 010

• डिजाइन एवं प्रिंटिंग : •

पद्मोदय प्रकाशन

A-7, अवागढ़ हाउस, अंजना सिनेमा के सामने, एम.जी. रोड, आगरा-2 दूरभाष : 09319203291

Scanned by CamScanner

कपिल केवली

बड़ी साधु वन्दना सचित्र कथाएँ (भाग-2)

आशीर्वाद प्रदाता

आचार्यप्रवर श्री शुभचन्द्र जी म. सा.

संयमशिरोमणि पण्डितरत्न उपाध्यायप्रवर

श्री पार्श्वचन्द्र जी म. सा.

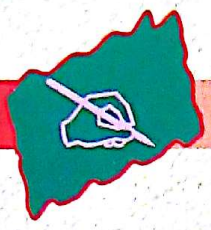

लेखक

जयगच्छीय दशम पट्टधर आचार्यप्रवर

श्री लालचन्द्र जी म. सा. के सुशिष्य

डॉ. श्री पदमचन्द्र जी म.सा.

प्रकाशक : श्री जयमल जैन पार्श्व-पद्मोदय फाउण्डेशन ट्रस्ट, चैन्नई

Scanned by CamScanner

अनुक्रमणिका

कपिल का जन्म 3

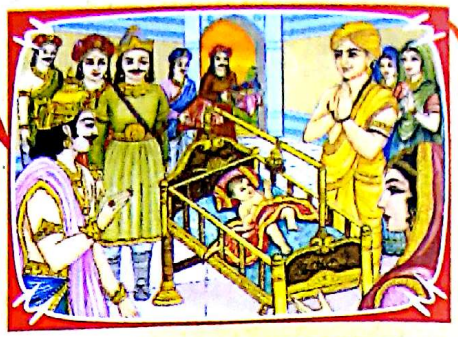

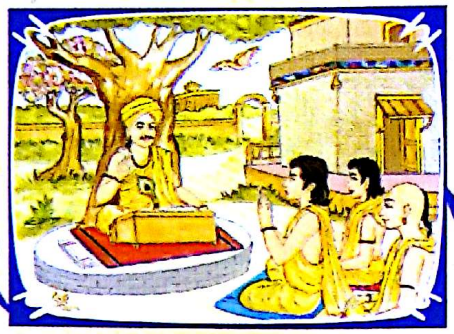

8 कपिल का संकल्प

श्रावस्ती में विद्याध्ययन 11

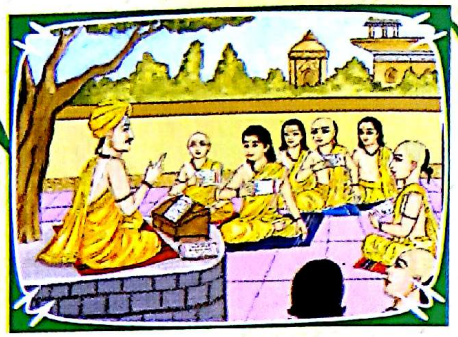

14 कपिल-कपिला का मिलन

दो माशा सोना 17

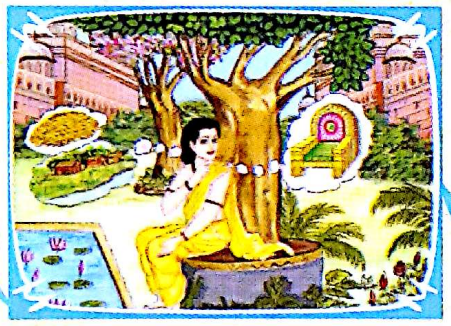

23 कपिल का चिन्तन

ग्रहण करने में भय है..... 26

29 पाँच सौ चोरों को दिया प्रतिबोध

Scanned by CamScanner

कपिल केवली

धन्य कपिल मुनिवर, नमी नमूँ अणगार।
जेणे तत्क्षण त्याग्यो, सहस्र-रमणी परिवार।।

—बड़ी साधु वन्दना- १३

कपिल का जन्म

कौशाम्बी नगर पर राजा प्रसेनजित का शासन था। उनके राजपुरोहित थे महापण्डित काश्यप। काश्यप ज्योतिष, निमितज्ञान, नीतिशास्त्र के प्रकाण्ड विद्वान थे एवं अनेक विद्याओं के ज्ञाता भी थे। राजदरबार में उनका विशिष्ट स्थान था। राजा प्रसेनजित उनका बहुत सम्मान करते थे। राज्य के अनेक महत्वपूर्ण कार्यों में भी उनकी सलाह लेते थे।

प्रौढ़ावस्था में महापण्डित काश्यप को पुत्र-रत्न की प्राप्ति हुई। राजा प्रसेनजित अपने मंत्रियों के साथ उनको बधाई देने घर पहुँचे। बालक को आशीर्वाद देते हुए बोले—"पुरोहितजी ! यह बालक आपकी तरह ही सर्वगुण सम्पन्न विद्वान बने।" फिर उन्होंने वहाँ उपस्थित लोगों के बीच घोषणा

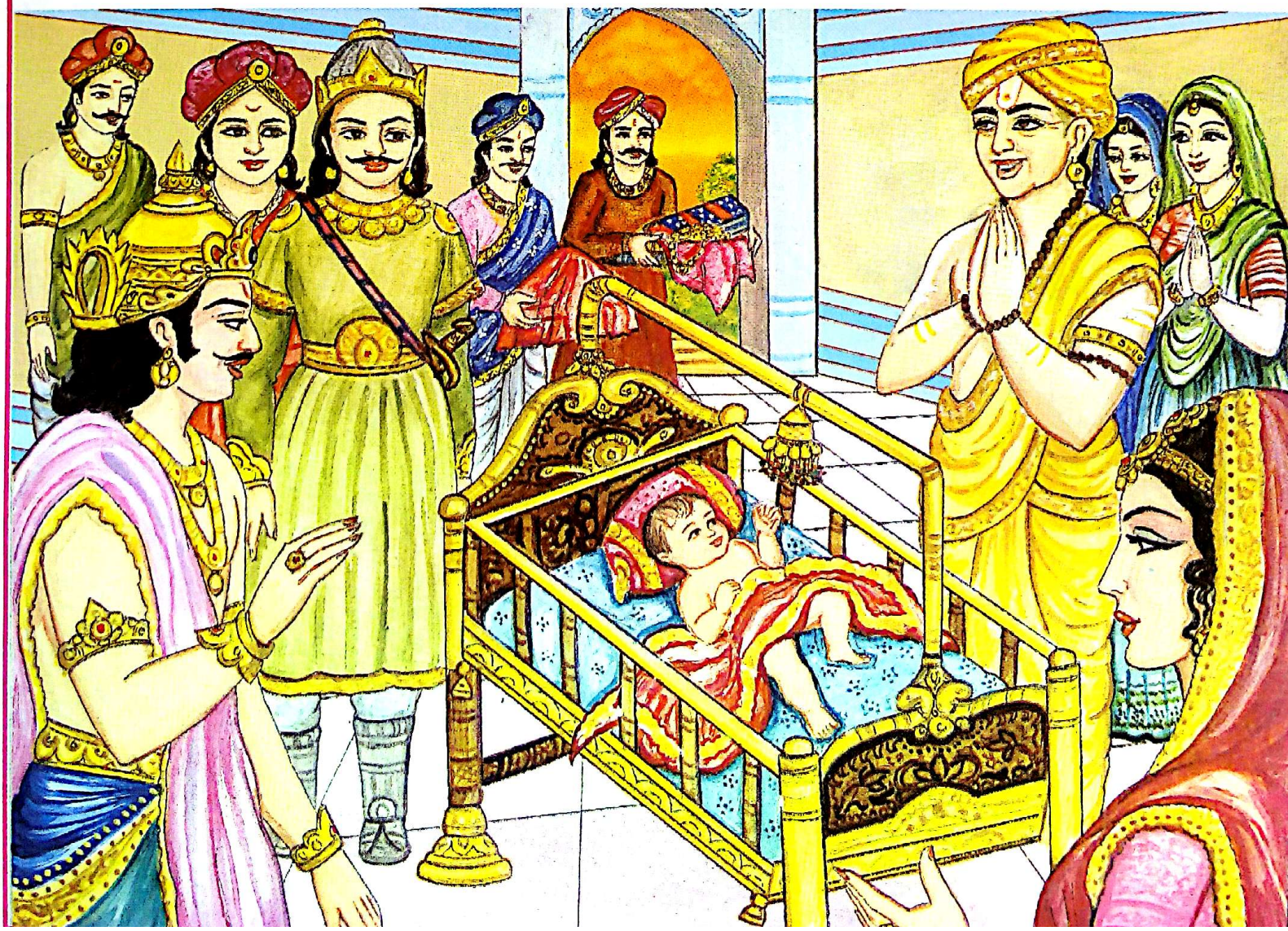

Scanned by CamScanner

की—''इस प्रसन्नता के अवसर पर हम पुरोहितजी को सम्मानित करना चाहते हैं। आज से इनको घर से राजमहल आने-जाने के लिये राजकीय रजतशिविका दी जाती है।'' घोषणा सुनकर सभी अतिथियों ने हर्ष प्रकट किया।

अब राजपुरोहित काश्यप प्रतिदिन गाजे-बाजे के साथ शिविका में बैठकर राजसभा में आने-जाने लगे।

समय बीतने लगा। कपिल सात-आठ वर्ष का हो गया। इकलौता बालक माता के लाड़-प्यार में बड़ा होने लगा।

बालक कपिल की उम्र आठ वर्ष की होने पर गुरुकुल भेजने का विचार चल रहा था। तभी अचानक महापंडित काश्यप बीमार हुए और थोड़े ही दिन में उनका देहान्त हो गया। राजा प्रसेनजित ने कपिल की बाल्यावस्था को देख राजपुरोहित का पद सोमिल नामक एक विद्वान ब्राह्मण को दे दिया। माता यशा और कपिल का राजसम्मान छिन गया। माता दुखी मन से यह सब देखती रही।

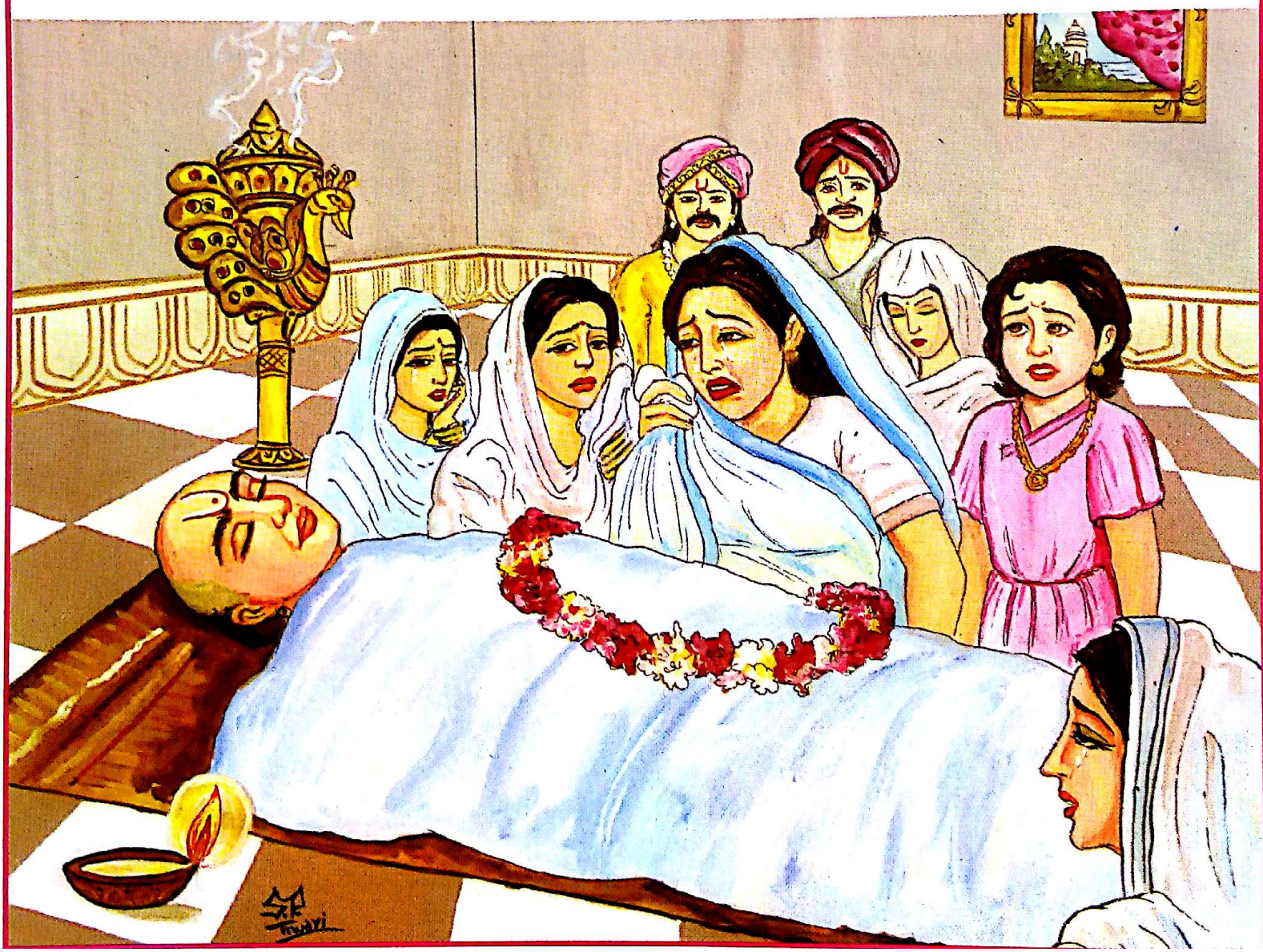

Scanned by CamScanner

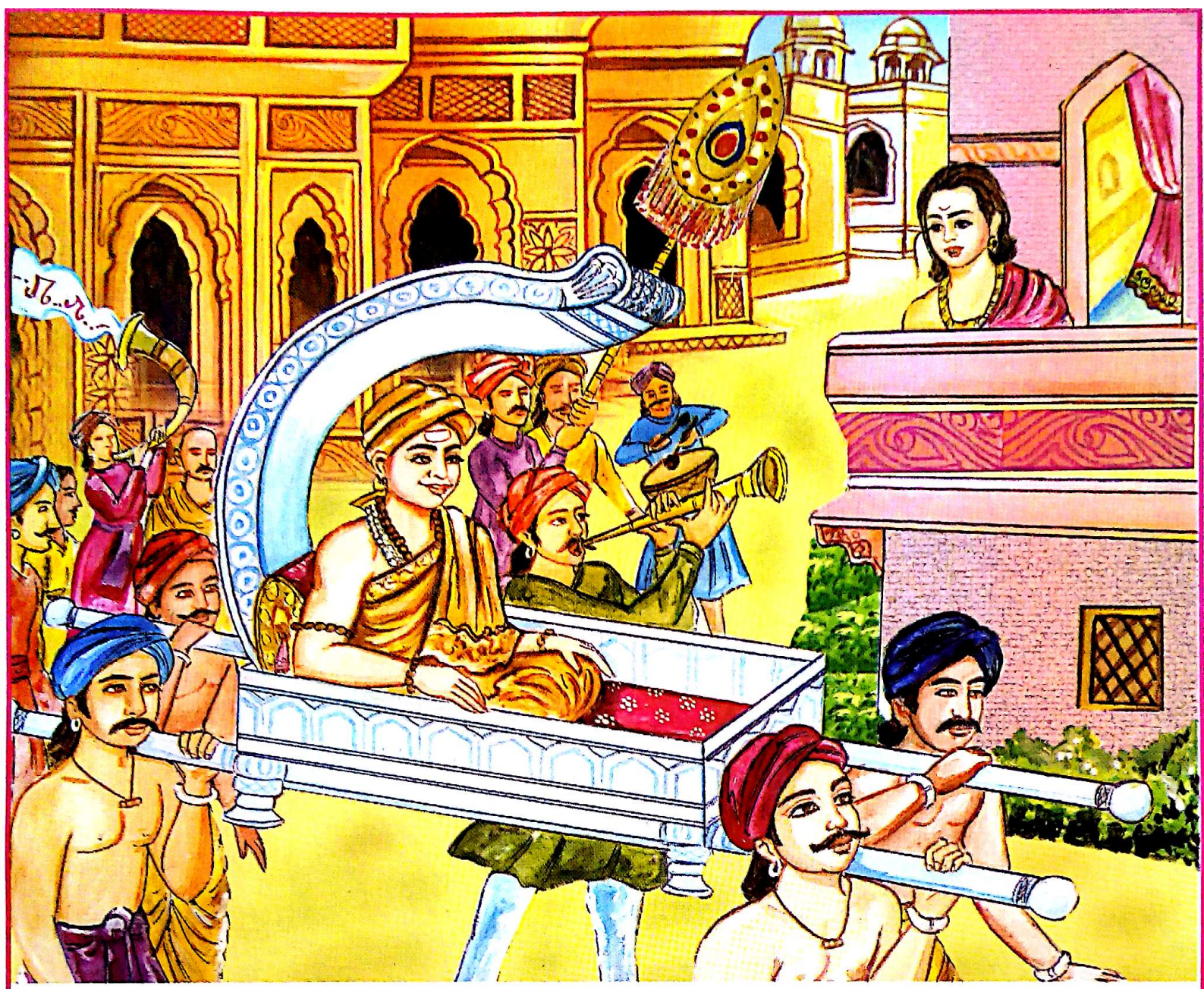

सब दिन समान नहीं होते। समय बड़े से बड़े घाव को भर देता है। धीरे-धीरे माता यशा की मन:स्थिति भी सामान्य हो गई।

बालक का कौतुहल

एक दिन कपिल के घर के सामने राजमार्ग से वर्तमान राजपुरोहित सोमिल की राजसवारी निकली। बड़ा ठाट-बाट था सवारी के निकलने में। सोमिल ने बहुमूल्य पोशाक धारण कर रखी थी। वाद्य-यंत्र बजाते सेवक आगे-पीछे चल रहे थे। लोग झुक-झुककर उन्हें प्रणाम कर रहे थे। कपिल भी बाल-सुलभ कौतुहलवश बाहर सवारी देखने दौड़ गया। सवारी देखकर मन ही मन वह प्रसन्न हो, तालियाँ बजाने लगा। घर आकर उसने माता को बताया—"माँ ! आज अपने घर के सामने से कैसी सुन्दर यात्रा निकल रही है ! जरा चलकर देखो।"

Scanned by CamScanner

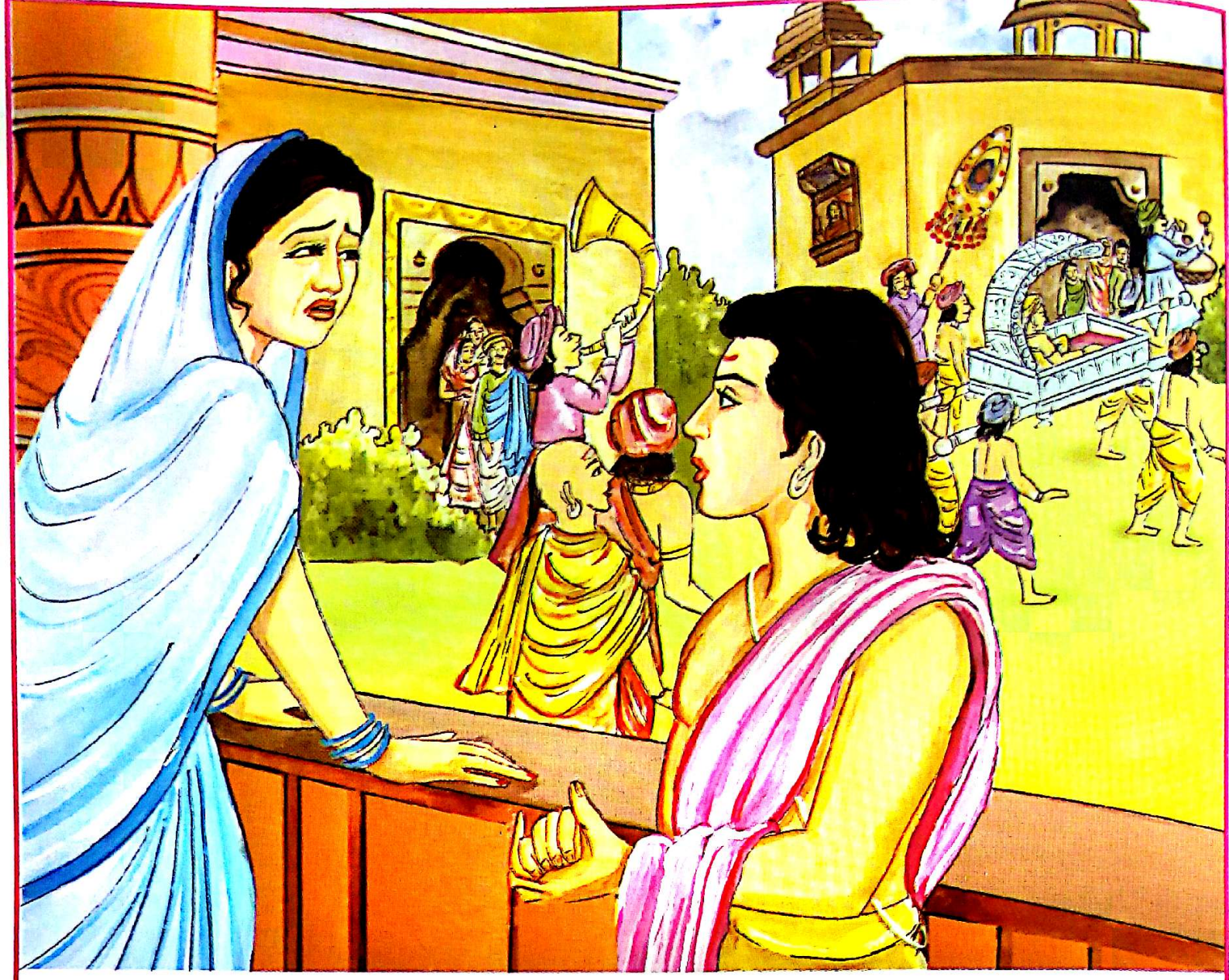

माँ ने बाहर आकर सवारी देखी तो उसकी आँखों से आँसू बहने लगे। कपिल ने आश्चर्यचकित होकर माता से पूछा—''माँ ! लोग तो गाजे-बाजे बजाकर खुश होकर जा रहे हैं, इसमें रोने की क्या बात है ? तुम क्यों रो रही हो ?''

कपिल की बात सुनकर माँ ने आँसू पोंछ डाले—''नहीं बेटा, कोई बात नहीं।'' परन्तु माता की आँखों की पीड़ा बालक से छुपी नहीं रह सकी।

''माँ ! तुम्हारा चेहरा दुख और विषाद की कथा स्वयं कह रहा है। तुम मुझे सच-सच बताओ कि क्या बात है ?'' कपिल ने आग्रह भरे स्वर में पूछा।

माता ने देखा कि कपिल बिना बताये मानने वाला नहीं है तो धीरे से बोली—''आज जिस सवारी को देखकर तुम प्रसन्न हो रहे हो, कभी उससे भी भव्य सवारी तुम्हारे पिता की निकलती थी। तब वे राज्य के राजपुरोहित थे। उनके मरणोपरान्त तुम्हारी बाल्यावस्था एवं तुम्हारे अनपढ़ होने से यह पद किसी अन्य

Scanned by CamScanner

को दे दिया गया। बस, उन्हीं सुखद स्मृतियों की याद मन में भर आई और मेरी आँखों से आँसू निकलने लगे।''

यह सुनकर कपिल गहरी सोच में डूब गया। माता ने कहा—''कपिल, किस सोच में पड़ गये।'' कपिल की तन्द्रा भंग हुई। उसने माँ से पूछा—''माँ ! क्या मैं राजपुरोहित नहीं बन सकता ?''

''नहीं पुत्र ! तुम पढ़-लिखकर विद्वान नहीं बने हो जो तुम्हें यह पद दिया जाये।''

''क्या मैं पढ़-लिखकर विद्वान नहीं बन सकता ?''

''मुझे लगता है कि जिस अवस्था में हम इस समय हैं, उसमें तेरी पढ़ाई-लिखाई हो नहीं सकेगी। अतः यह पद भी पुनः कभी हमारे परिवार को नहीं मिल पायेगा।''

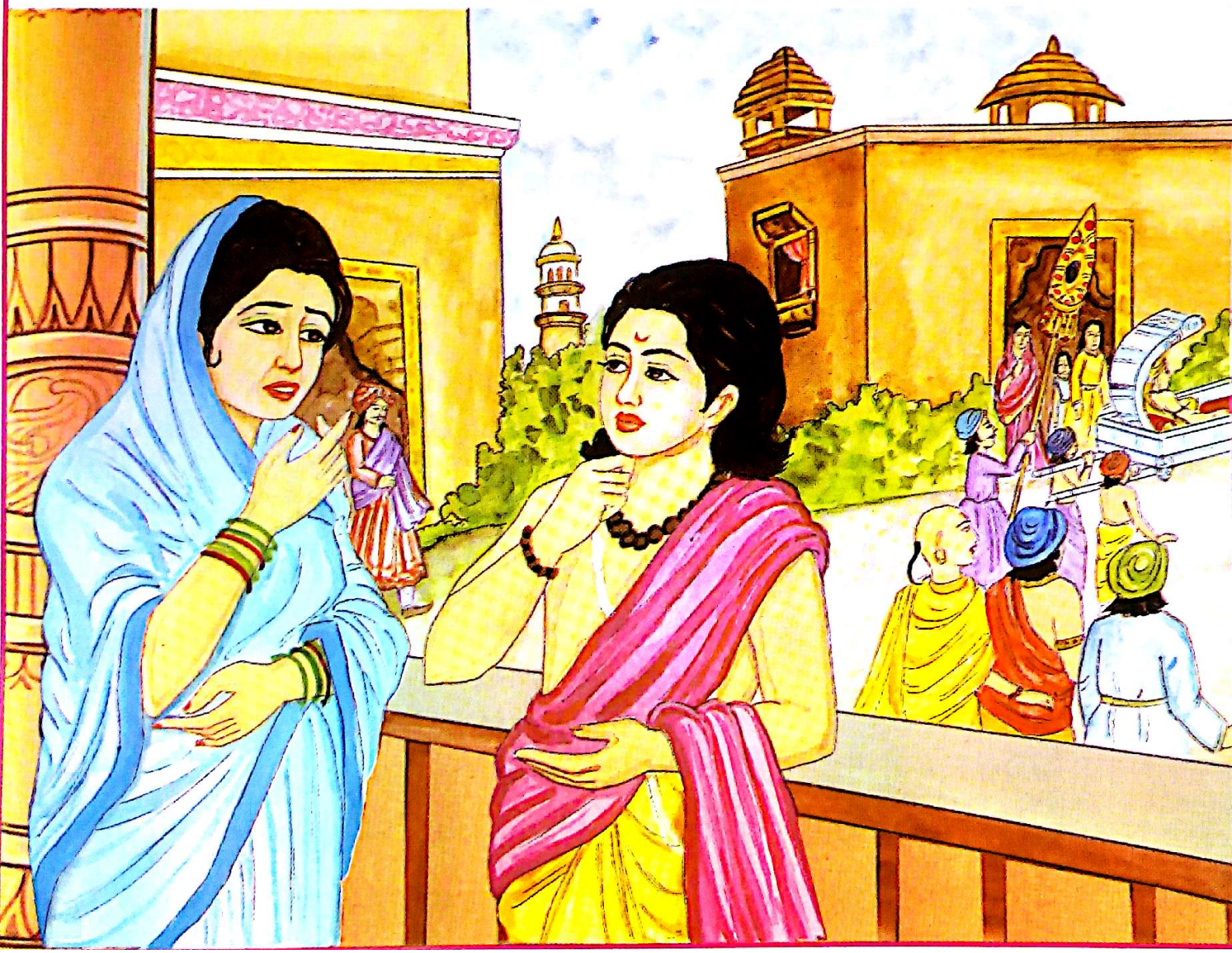

Scanned by CamScanner

कपिल का संकल्प

कपिल यह सुनकर गम्भीर हो गया। कुछ समय तक सोचता रहा। फिर दृढ़ स्वर में बोला—''माँ ! मैं भी पढ़-लिखकर पिताजी की तरह राजसी सम्मान प्राप्त करूँगा। आज से मैं संकल्प करता हूँ कि मेरे जीवन का उद्देश्य विद्याध्ययन करना ही होगा। पढ़ना-लिखना ही मेरा कर्म होगा और वही मेरा धर्म भी। योग्य ज्ञानोपार्जन कर मैं यह पद तो क्या, इससे भी श्रेष्ठ पद प्राप्त करूँगा।''

पुत्र के संकल्प को सुनकर माता का मन परम आनन्द से भर गया। उसने कपिल को ढेरों आशीर्वाद दे डाले। माँ के आशीर्वाद से कपिल का आत्मविश्वास बढ़ गया। वह बोला—''माँ ! मैं कल से ही गुरुकुल के लिए प्रस्थान कर दूँगा।''

माता ने समझाया—''नहीं पुत्र ! मुझे नहीं लगता कि इस नगर में तू ठीक तरह से पढ़ पायेगा। यदि पढ़ना भी चाहेगा तो नए राजपुरोहित के भय एवं दबदबे के कारण कोई तुझे पढ़ाने की हिम्मत भी नहीं करेगा। यह समझ ले कि यहाँ तो सभी ईर्ष्या की आग में जल रहे हैं। सभी सोचेंगे कि यदि यह पुनः राजपुरोहित का पद पा गया तो हमारा सुख, वैभव, सुविधाएँ, सम्मान सभी छिन जायेंगे।''

यह सुनकर कपिल का हृदय निराशा से भर गया—''माँ, फिर मैं कैसे पढ़ूँगा, कैसे विद्वान बनूँगा, क्या कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं है जो मुझे पढ़ा सके ?''

माता ने कुछ देर विचार किया, फिर बोली—''एक तरीका है तेरी पढ़ाई का। श्रावस्ती नगरी में तेरे पिता के परम प्रिय मित्र हैं—इन्द्रदत्त उपाध्याय। वे पारंगत विद्वान एवं अनेक कलाओं के जानकार हैं। तू पढ़ना चाहे तो उनके पास जाकर ज्ञान प्राप्त कर सकता है।''

''ठीक है माँ ! मैं कल ही उनके पास श्रावस्ती नगर जाकर अध्ययन प्रारम्भ कर दूँगा।'' कपिल ने कहा।

माता ने बालक के जाने की यथायोग्य तैयारी की और दूसरे दिन उसे एक विश्वस्त साथी के साथ विदा कर दिया। जाते-जाते माँ ने सीख दी—''देख कपिल परदेश में ठीक तरह से रहना। अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना। गुरु का आदर

Scanned by CamScanner

करना और कोई भी ऐसा कार्य मत करना जिससे तेरे पिताजी के नाम पर कलंक लगे।''

''तुम निश्चिंत रहो माँ, मैं तुम्हारी बातों का पूरा पालन करूँगा, खूब अध्ययन कर विद्वान पंडित बनकर वापस आऊँगा और राजपुरोहित से भी श्रेष्ठ पद प्राप्त करूँगा।'' फिर माँ को भावपूर्वक नमन करके साथी के साथ अपने गंतव्य की ओर चल दिया।

बालक कपिल श्रावस्ती आ गया। पता पूछते-पूछते वह इन्द्रदत्त उपाध्याय के गुरुकुल पहुँचा। यथोचित विनय कर उसने अपना परिचय दिया।

कपिल का परिचय जानकर इन्द्रदत्त ने प्रसन्नतापूर्वक कहा—''ओह ! तुम मेरे परम मित्र काश्यप के बेटे हो। मित्र काश्यप कैसा है, परिवार में सब ठीक तो हैं ?''

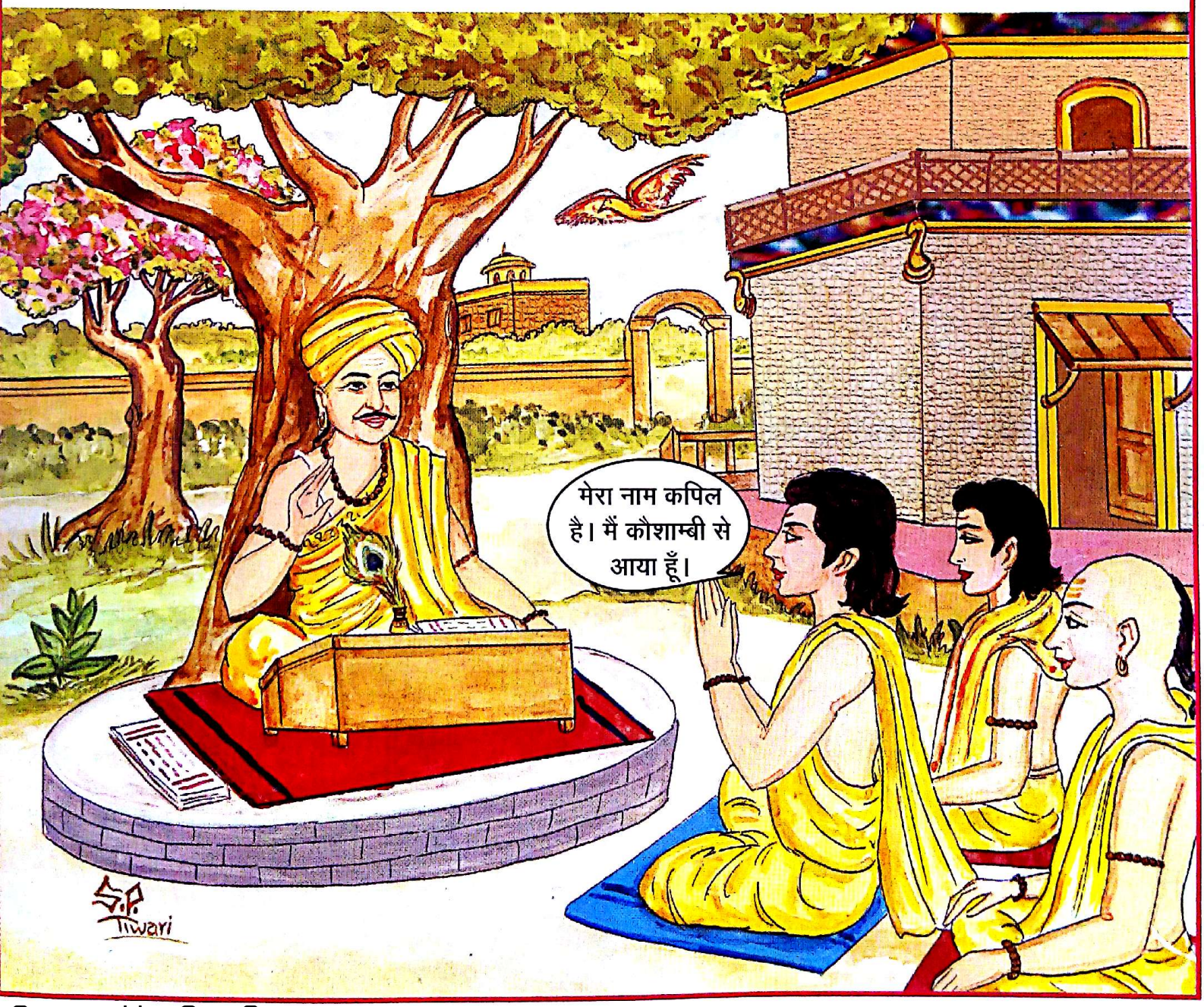

Scanned by CamScanner

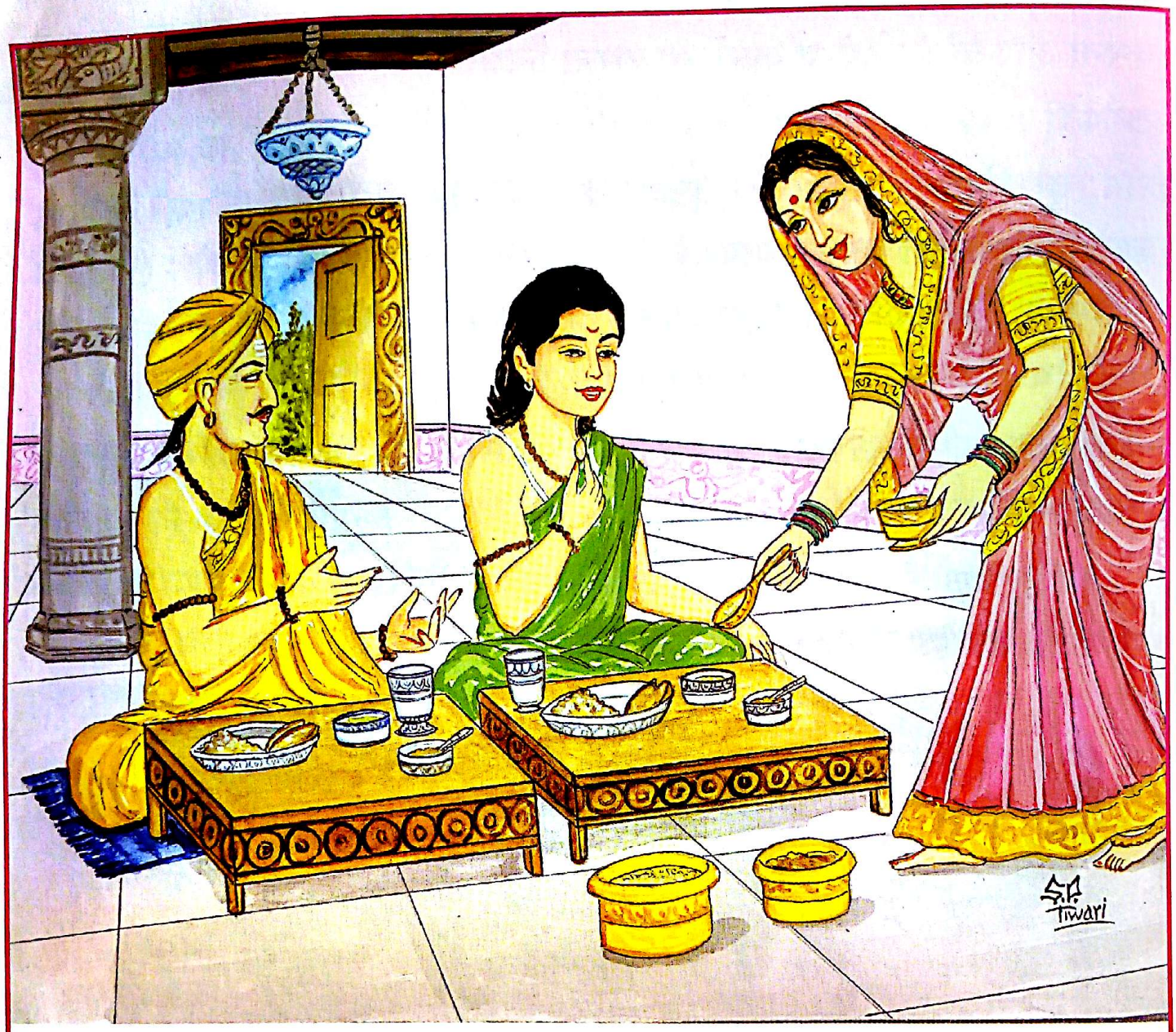

"जब मैं छोटा था, तब ही पिताजी चल बसे थे। घर में मैं और माँ ही हैं।" कहते-कहते गला भर आया कपिल का।

"ओह ! यह तो बहुत बुरा हुआ।" मित्र के देहान्त के समाचार सुनकर इन्द्रदत्त को गहरा दुख हुआ। उन्होंने आत्मीय भाव से कपिल को गले लगाया और बोले—"कोई बात नहीं बेटा, मैं भी तुम्हारे पिता समान हूँ।" वह कपिल को गुरुकुल के अन्दर स्थित अपने आवास पर ले आए। स्नान आदि के पश्चात् इन्द्रदत्त की पत्नी ने प्रेमपूर्वक कपिल को भोजन कराया। भोजन से निवृत होने पर इन्द्रदत्त ने कपिल से पूछा—"कहो बेटा, श्रावस्ती कैसे आना हुआ ? लगता है किसी विशेष प्रयोजन से मेरे पास आये हो ?"

Scanned by CamScanner

कपिल–''आचार्यवर ! मेरी माता यशा ने मुझे विद्याध्ययन हेतु आपके पास भेजा है। मैं बहुत बड़ा विद्वान बनकर अपने पिताजी का पद पाना चाहता हूँ। कृपया मुझे अपना शिष्य बना लीजिये। मैं पूरी निष्ठा के साथ अध्ययन करूँगा।''

पंडित इन्द्रदत्त ने तब अपने मित्र-पुत्र पर पारखी नजर डाली। उन्हें वह तेजस्वी, बुद्धिमान् एवं जिज्ञासु लगा। मन में प्रसन्नता हुई, सोचा–'योग्य पात्र है और मित्र का पुत्र भी। मैं इसे शास्त्रों के समस्त गूढ़-रहस्यार्थ सिखा दूँगा।'

वे बोले–''ठीक है, मैं तुम्हें यथोचित विद्याध्ययन कराऊँगा।''

श्रावस्ती में विद्याध्ययन

कपिल का अध्ययन प्रारम्भ हुआ। वह तीव्र बुद्धिशाली था, मेधावी था, श्रमसाधक था अतः अतिशीघ्र ज्ञान की अनेक सीढ़ियाँ चढ़ गया। विद्याध्ययन में

Scanned by CamScanner

वह उस समय पंडित इन्द्रदत्त के सभी शिष्यों में श्रेष्ठ था, अतः गुरुकृपा भी उस पर विशेष थी। अपनी लगनशीलता के बल पर वह निरन्तर आगे बढ़ता रहा, सीढ़ियाँ चढ़ता रहा, विद्वान बनता रहा।

अनेक सीढ़ियाँ चढ़ने के पश्चात् जब गूढ़ ज्ञान सीखने का समय आया तो हमेशा सबसे आगे रहने वाला वह कपिल शनैःशनैः पिछड़ने लगा। गुरु ने शीघ्र ही इसका अनुभव कर लिया। एक दिन रात्रि में पंडित इन्द्रदत्त ने कपिल से पूछा—"क्या बात है ? सबसे आगे रहने वाले होकर धीरे-धीरे पीछे कैसे सरक रहे हो कपिल ?"

कपिल ने कहा—"गुरुदेव ! विद्या के गूढ़ रहस्यों को सीखने-समझने के लिए जितना समय चाहिए, अब उतना नहीं मिल पा रहा है। पहले अध्ययन में सरलता थी, समय कम लगता था। आज समय तो वही है, पर विद्या-भार बढ़ गया है।

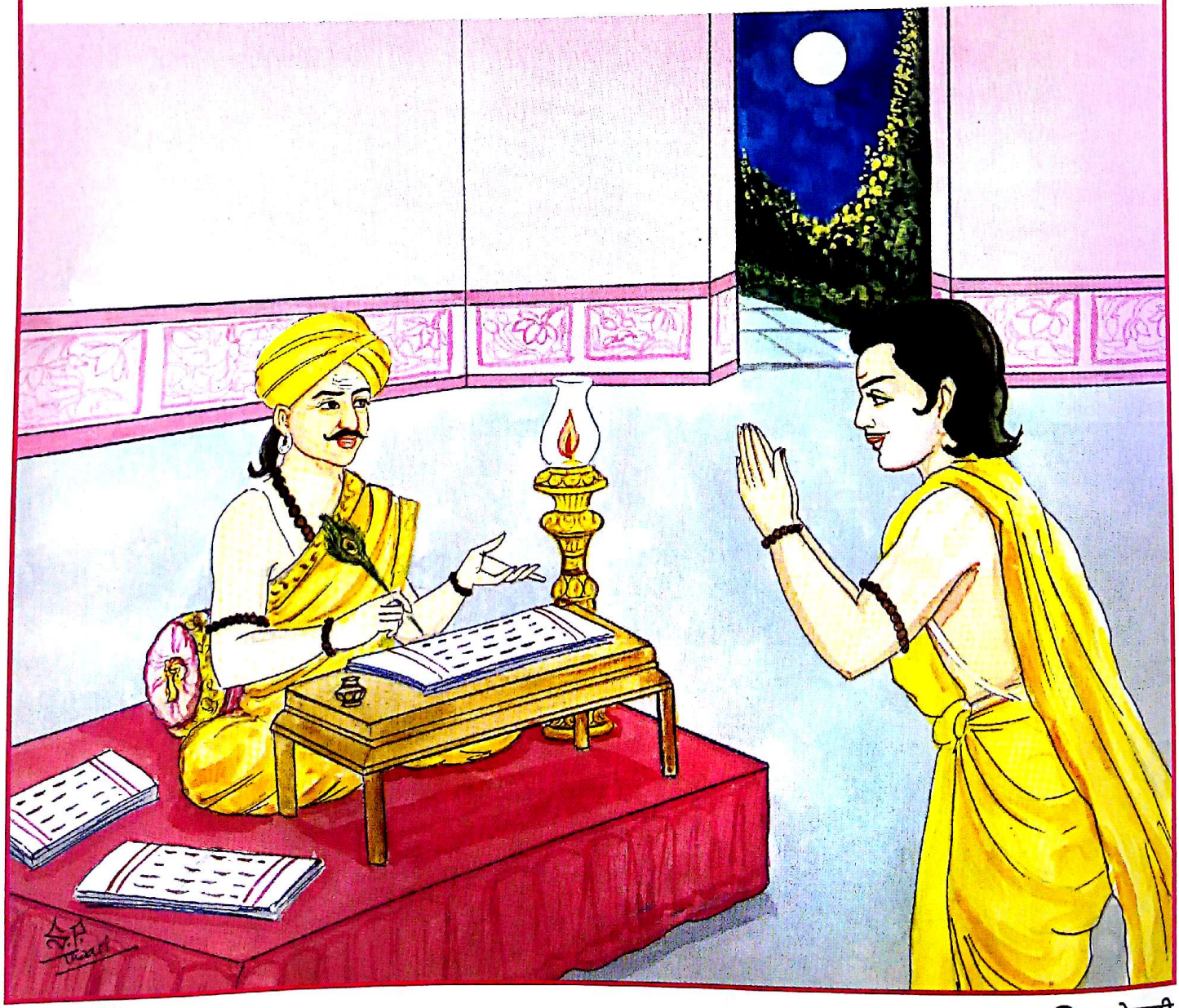

Scanned by CamScanner

भिक्षान्न भी माँगकर लाना, शोधना, भोजन हाथ से बनाना, बर्तन साफ करना, घर बुहारना आदि कार्य तो पहले की तरह ही करने पड़ते हैं। काफी समय इन कामों में यों ही निकल जाता है।''

गुरु ने भी सोचा–'शिष्य कह तो ठीक ही रहा है। जो बात युक्तिसंगत और उचित हो, उसे तो स्वीकार करना ही होगा पर उपाय क्या ?' उन्होंने नगर-श्रेष्ठी शालिभद्र को बुलावा भेजा। उनके आने पर उन्हें कहा–''श्रेष्ठिवर ! यह जो तरुण कपिल है, बड़ा होनहार विद्यार्थी है। तुम इसके भरण-पोषण का भार अपने ऊपर क्यों नहीं ले लेते ?''

नगर-श्रेष्ठी ने सहज स्वीकार कर लिया। इस प्रस्ताव से कपिल की सारी समस्याएँ दूर हो गईं।

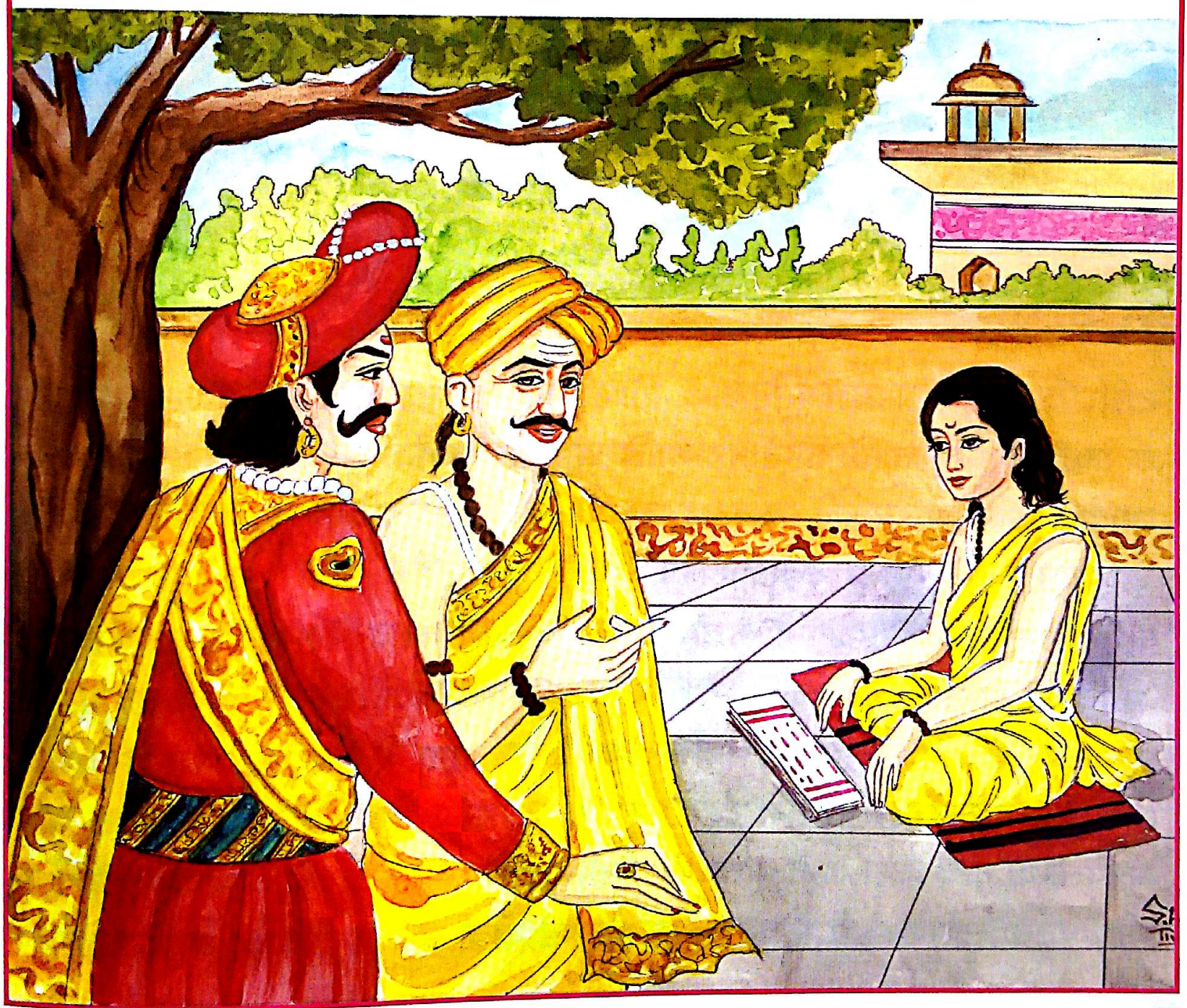

Scanned by CamScanner

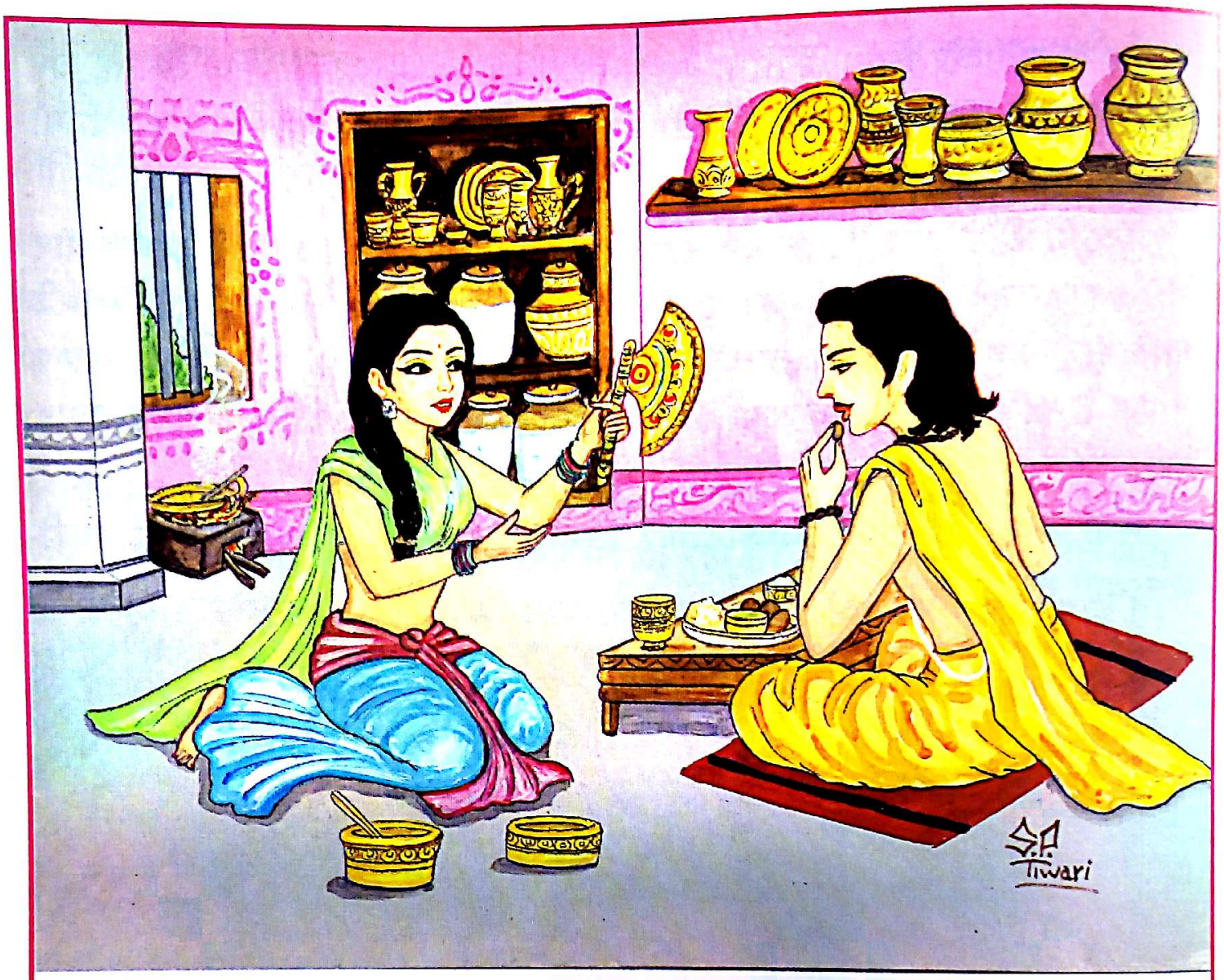

कपिल–कपिला का मिलन

पंडित इन्द्रदत्त के कहने पर शालिभद्र सेठ ने अपने अतिथि-गृह में कपिल के आवास और भोजन की व्यवस्था कर दी। अब कपिल सेठ के यहाँ रहता और अध्ययन के लिए पंडित इन्द्रदत्त उपाध्याय के गुरुकुल में जाता।

सेठ शालिभद्र ने अपनी दासी की पुत्री कपिला को कपिल की सेवा, खानपान आदि की व्यवस्था करने का आदेश दिया। कपिला, कपिल को दोनों समय भोजन बनाकर परोसती, उसके झूठे बर्तन माँजती, घर बुहारती और छोटे-बड़े सभी कार्य प्रेमपूर्वक कर देती। कपिला बहुत ही हँसमुख और मिलनसार थी। कपिल और कपिला के बीच कभी-कभी बातचीत, हँसी-मजाक भी हो जाती। धीरे-धीरे दोनों के बीच बढ़ता सम्पर्क मैत्री में बदल गया। पहले दोनों ने निकटता का अनुभव किया।

Scanned by CamScanner

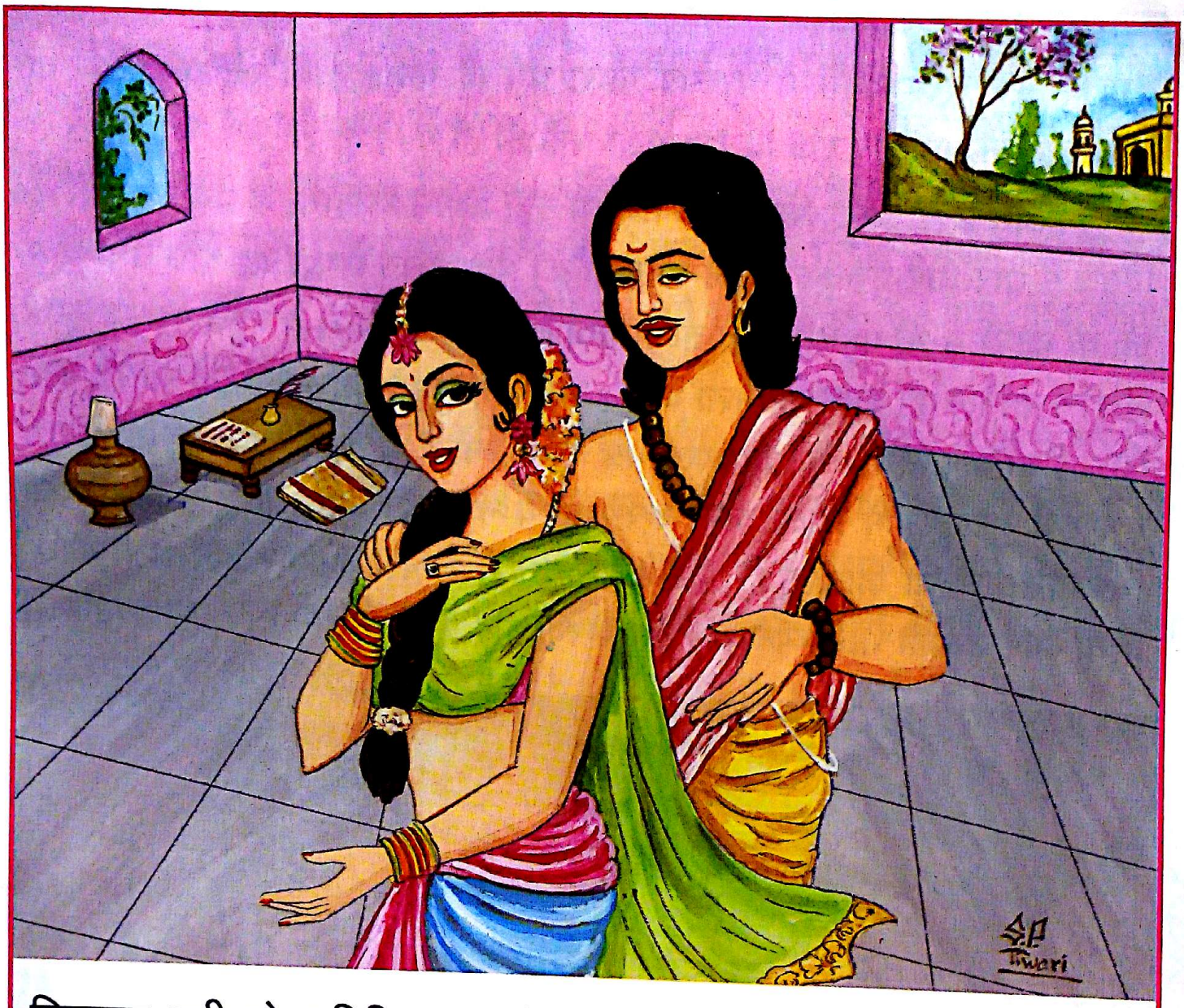

निकटता बढ़ी तो अतिनिकटता की स्थिति आई। एक बार कपिल की तीव्र ज्वराक्रान्त परिस्थिति में कपिला ने बहुत आत्मीय भाव से सेवा की, अतः दोनों के दिलों में प्रेम का प्रस्फुटन हुआ। कपिल ने अपने प्रेम का इज़हार एक दिन कपिला से करते हुए कह दिया—''प्रिये ! तुम कितनी अच्छी हो। तुम्हारा सहज सुकुमार सौन्दर्य और विनम्र सेवाभाव देखकर लगता है तुम कोई दासकन्या नहीं, देवकन्या हो। तुम्हारा यह स्नेह कोई पिछले जन्म का लगता है।''

कपिला ने शर्माकर कहा—''नहीं ! नहीं ! मैं तो आपके चरणों की दासी हूँ। मुझे आपका काम करके प्रसन्नता का अनुभव होता है। मैं तो सदा इसी तरह आपकी सेवा करना चाहती हूँ।''

कपिल—''कपिला, मैं तुम्हारे जीवन के अन्धकार को दीपक की भाँति दूर कर

Scanned by CamScanner

दूँगा।'' इस तरह दोनों में परस्पर गहरा प्रेम हो गया। दोनों की यह निकटता विकटता बन गई और एक दिन कपिला गर्भवती हो गई।

कहावत है—''इश्क और मुश्क छिपाये नहीं छिपते।'' दोनों के प्रेम सम्बन्धों के विषय में धीरे-धीरे गुरुकुल के अन्य छात्रों को पता चलने लगा। यह बात उपाध्याय जी के कानों में भी पहुँच गई। पता लगाया तो बात सत्य थी। वे बहुत नाराज़ हुए। उन्होंने कपिल को बहुत बुराभला कहा—''कपिल, तुमने नगर-श्रेष्ठी के सामने मेरा सिर नीचा कर दिया। मेरे दिवंगत मित्र की आत्मा को कितना कष्ट पहुँचा होगा। तुम इस गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त करने योग्य नहीं हो। आज से तुम्हें आश्रम से निष्कासित किया जाता है।'' पंडित इन्द्रदत्त ने कपिल को गुरुकुल से निकाल दिया और उसकी सारी व्यवस्थाएँ बंद करवा दी।

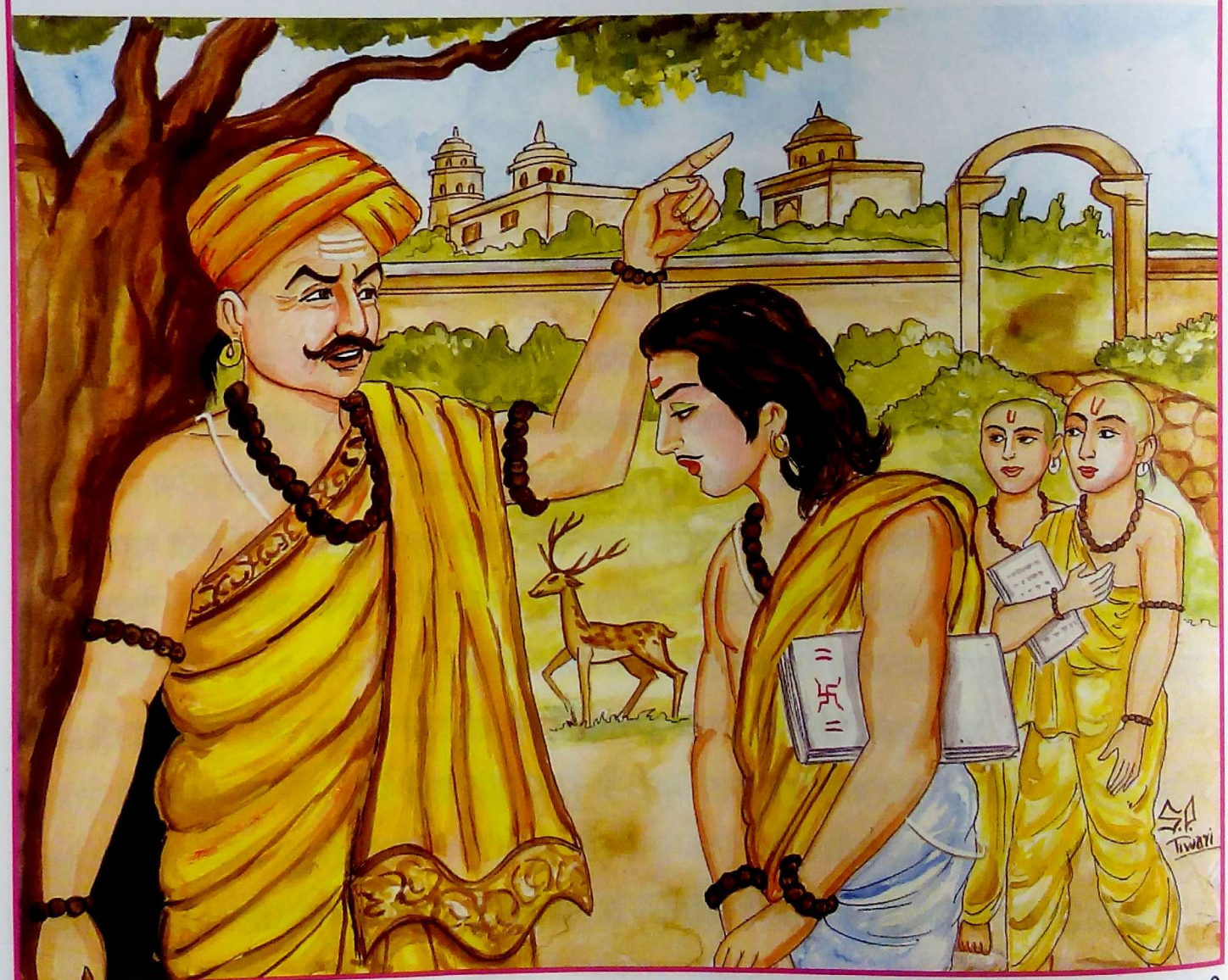

Scanned by CamScanner

कपिल को गहरा धक्का लगा। विद्याध्ययन छूट गया, सीधी भोजन-सामग्री मिलनी बंद हो गई। वह निराश होकर कपिला के घर में बैठा रहता। घर पर बैठे-बैठे खाने के भी लाले पड़ गये। कपिला ने कहा—''स्वामी, इस तरह घर पर कब तक बैठे रहोगे। कुछ करते क्यों नहीं ? ब्राह्मण हो, भिक्षा माँगकर लाओ, कुछ गुजारे की व्यवस्था करो। दोनों के पेट के लिये ही पूरा नहीं पड़ रहा, अब तीसरा भी आने वाला है।''

कपिला की बात सुनकर कपिल चिन्ता में घिर गया—क्या करे, क्या न करे ?

इधर चिन्ता बढ़ी, उधर कोई मददगार नहीं। सहपाठी मिलते तो दुत्कारते। जहाँ वह जाता, अपमानित किया जाता। जगह-जगह उसकी निन्दा होने लगी। ब्राह्मण था, माँग कर ले आता पर स्थिति ऐसी बनी हुई थी कि किसी के आगे हाथ पसारने की भी हिम्मत नहीं होती थी।

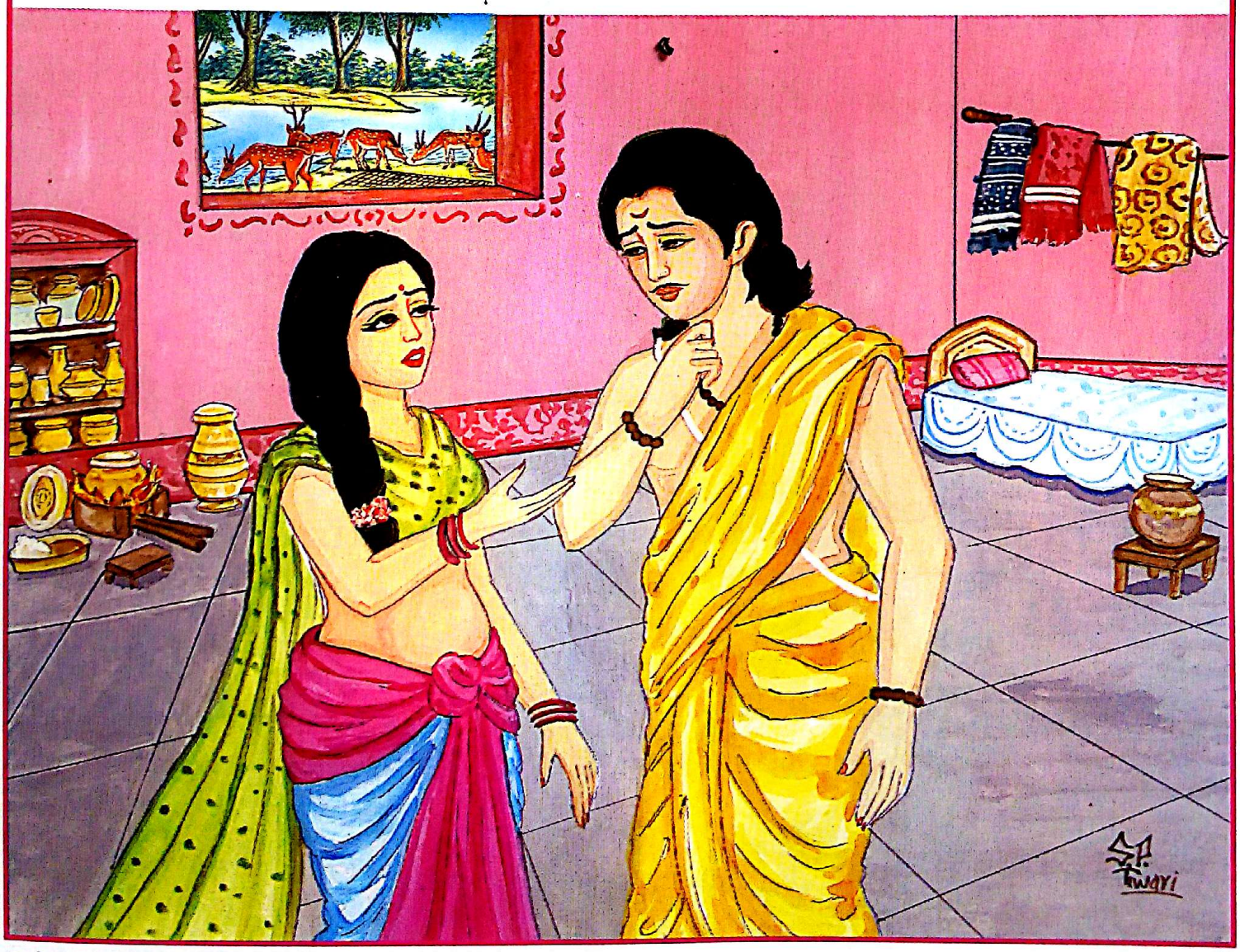

Scanned by CamScanner

दो माशा सोना

पेट की समस्या उग्र हो रही थी। करे तो क्या करे कि पेटभर खाना मिल जाए। फिर संतान भी होने वाली थी, अतः व्यय-भार बढ़ना था पर पास में कुछ हो ही नहीं तो कैसे हो सकेंगी सारी व्यवस्थाएँ ? चिन्ता खाए जा रही थी। एक दिन कपिला ने कहा—''यहाँ के राजा बड़े दयालु हैं, गुणवंत हैं, विद्वान हैं। वे विद्वानों का बहुत सम्मान करते हैं। उनका नित्य नियम है कि जो प्रातः सर्वप्रथम उन्हें शुभाशीर्वाद रूप प्रशस्ति सुनाता है, उसे वे दो माशा स्वर्ण प्रदान करते हैं। तुम यदि सबसे पहले जाओ और उन्हें प्रशस्ति सुनाओ तो समस्या का समाधान निकल सकता है।''

कपिल को बात जँच गई। वह बोला—''ठीक है, मैं कल सबसे पहले राजमहल पहुँचकर महाराज को प्रशस्ति सुनाऊँगा।'' उसने प्रशस्ति श्लोक बनाया, संध्या हुई, रात आई, कपिल शय्या पर लेटकर निद्रा की प्रतीक्षा करने लगा। दिमाग में दो माशा सोना घूम रहा था। जिस बात की चिन्ता रहती है, स्मृति-कोष में संचित

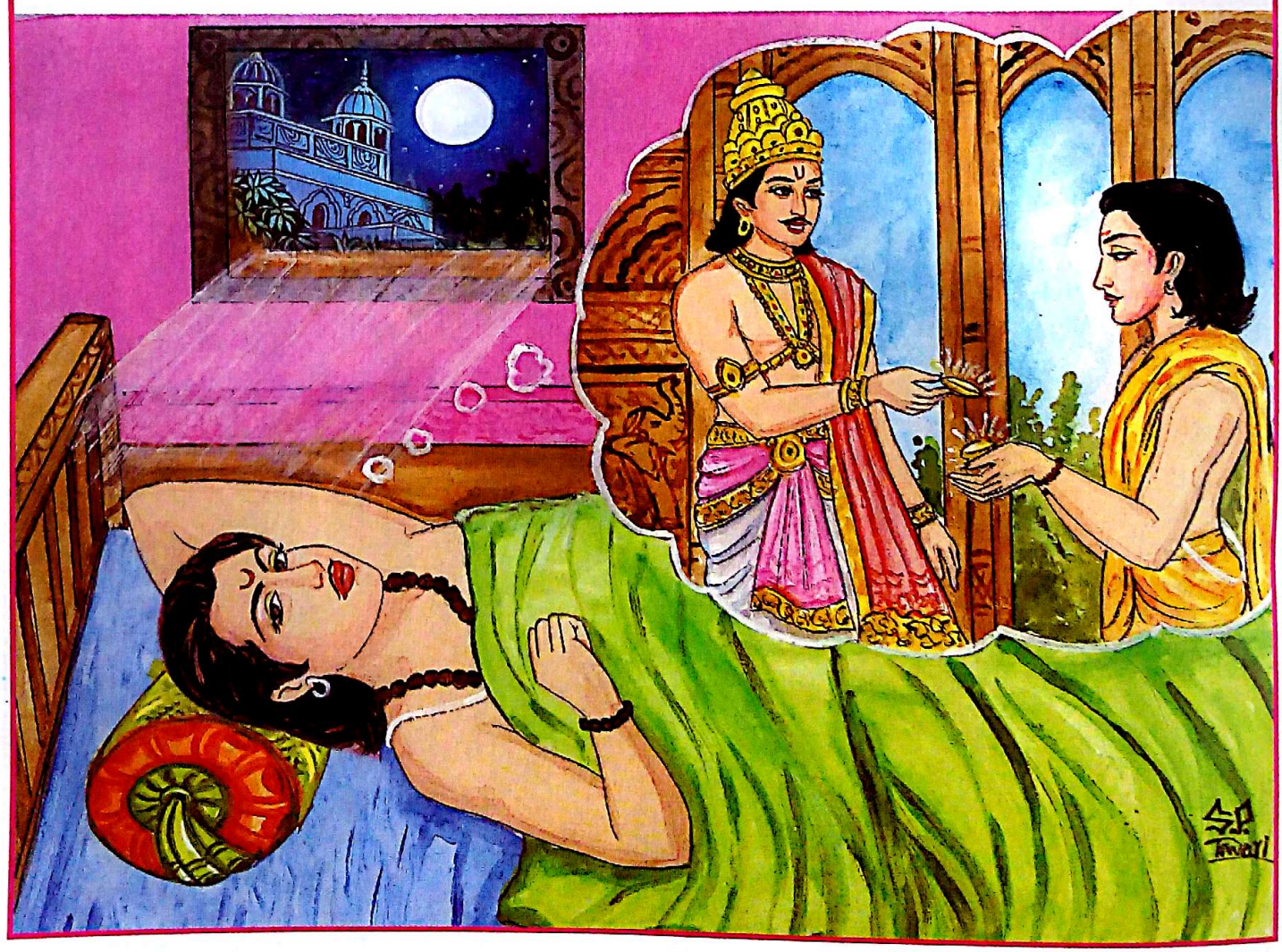

Scanned by CamScanner

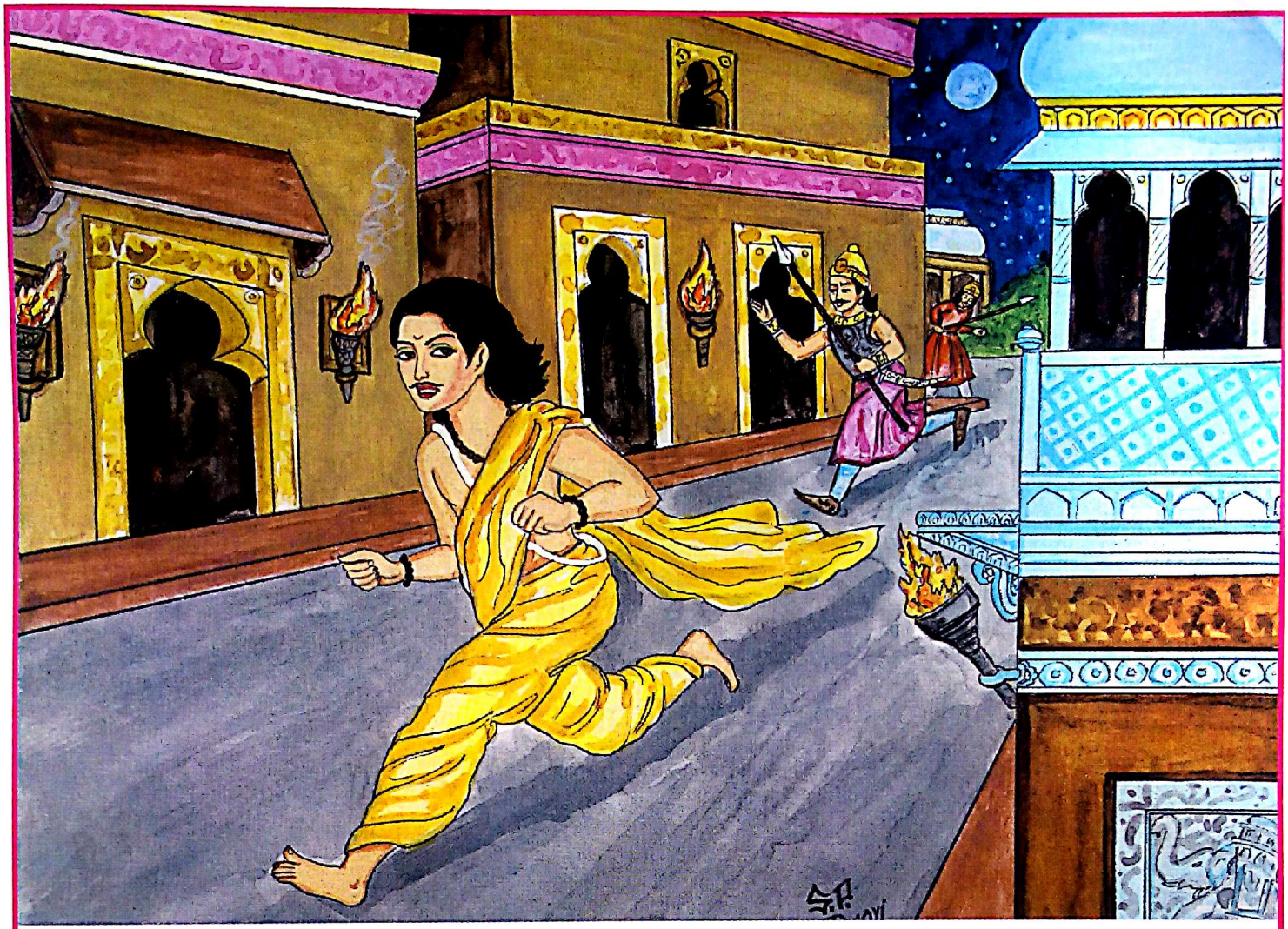

वह बात निरन्तर अचेतन मस्तिष्क में चक्कर काटती रहती है। कपिल भी चिन्तित था कि सबसे पहले जाना है। जरा-सी आँख लगी कि पुनः जग गया। उस दिन पूर्णिमा थी। पूर्णिमा भी शरद-पूनम ! जिसकी शीतल, स्निग्ध, दुग्ध-धवल चन्द्र-ज्योत्सना पत्तों से छन-छनकर कमरे में आ रही थी। कपिल को पता नहीं लग सका कि क्या समय हुआ होगा ? उसने सोचा—'अरे ! प्रातः होने वाली है। कहीं मुझे राजा जी तक पहुँचने में देर न हो जाए।' इन्हीं विचारों में खोया हुआ कपिल रात्रि के तीसरे प्रहर ही घर से बाहर निकला और देर होने के भय से राजपथ पर दौड़ लगाने लगा। मन-मस्तिष्क में दो माशा स्वर्ण चक्कर खा रहा था।

रात्रि के पहरे पर नियुक्त सिपाहियों ने उसे देखा तो संदेह में पड़ गए। रात्रि के दो बजे राजपथ पर दौड़ते कपिल को ललकारा—''अरे रुक जा ! कौन है तू ?''

कपिल पहरेदार की आवाज सुनकर घबरा गया, वह और तेज भागने लगा। उसने सोचा—'पहरेदार ने मुझे पकड़ लिया तो पूछताछ करेगा। फिर सब

Scanned by CamScanner

भेद खुल जायेगा। मेरे और कपिला के प्रेम-सम्बन्ध राजा तक भी पहुँच जायेंगे। कितनी बेईज्जती होगी। और तेज भागकर पीछा छुड़ाऊँ।' वह और तेज भागने लगा। पहरेदार ने सोचा–'हो न हो यह चोर है। मुझे देखकर घबराकर भाग रहा है' उसने भी तेज दौड़ लगाई और कपिल को धर दबोचा–''पकड़ लिया चोर को।''

कपिल–''छोड़ो मुझे, मैं चोर नहीं हूँ।''

पहरेदार–''चोर नहीं है तो शराबी होगा, जुआरी होगा। कौन है तू ?''

कपिल–''मैं तो, राजा साहब को आशीर्वाद देने जा रहा हूँ। ब्राह्मण हूँ।''

पहरेदार–''हाँ भई, आधी रात को राजा तो तुम्हारा ही आशीर्वाद लेने महल से बाहर खड़े होकर इन्तजार कर रहे होंगे। चल चोर कहीं का, झूठ बोलता है !'' और उसने कपिल को जेल में बन्द कर दिया।

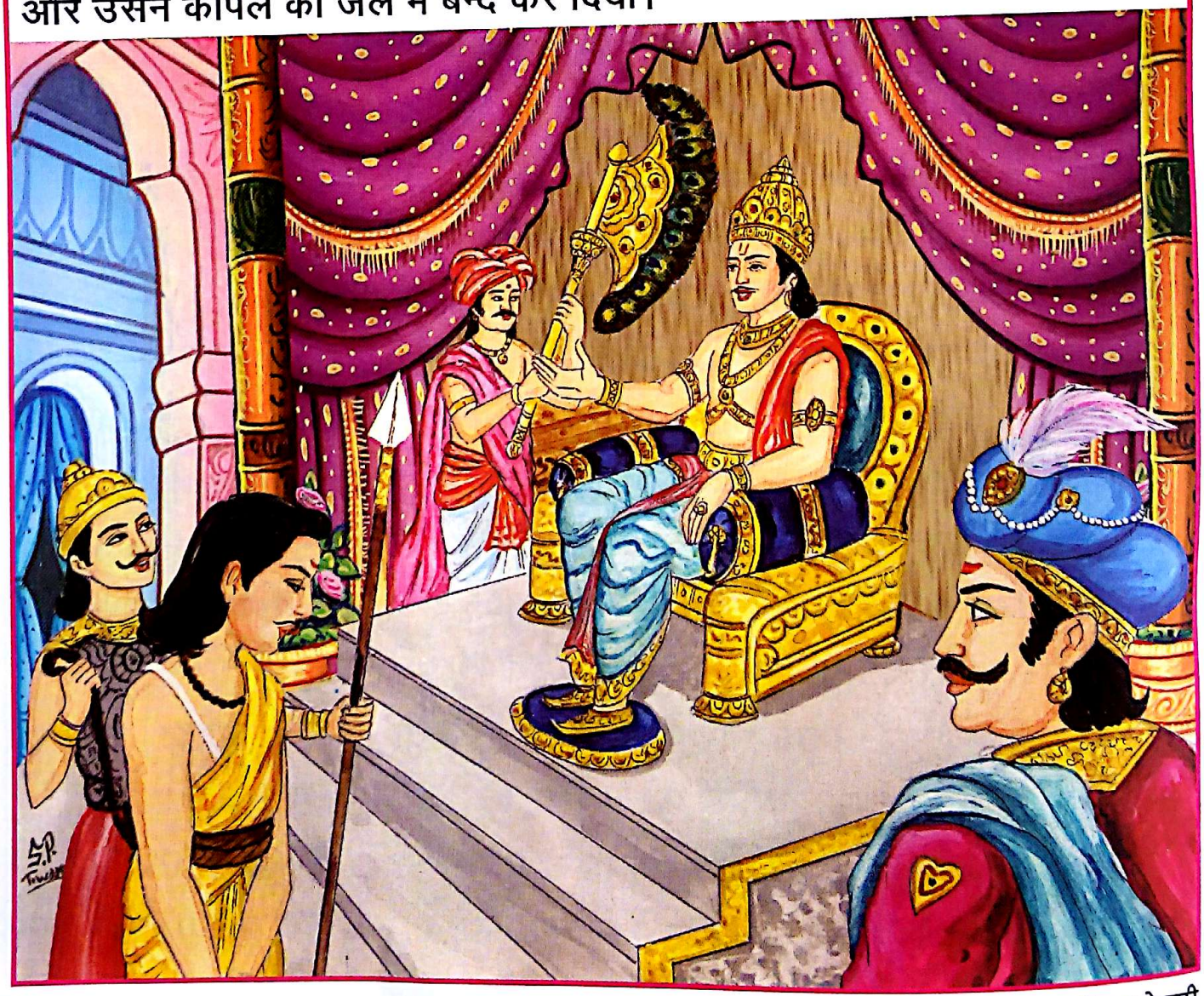

Scanned by CamScanner

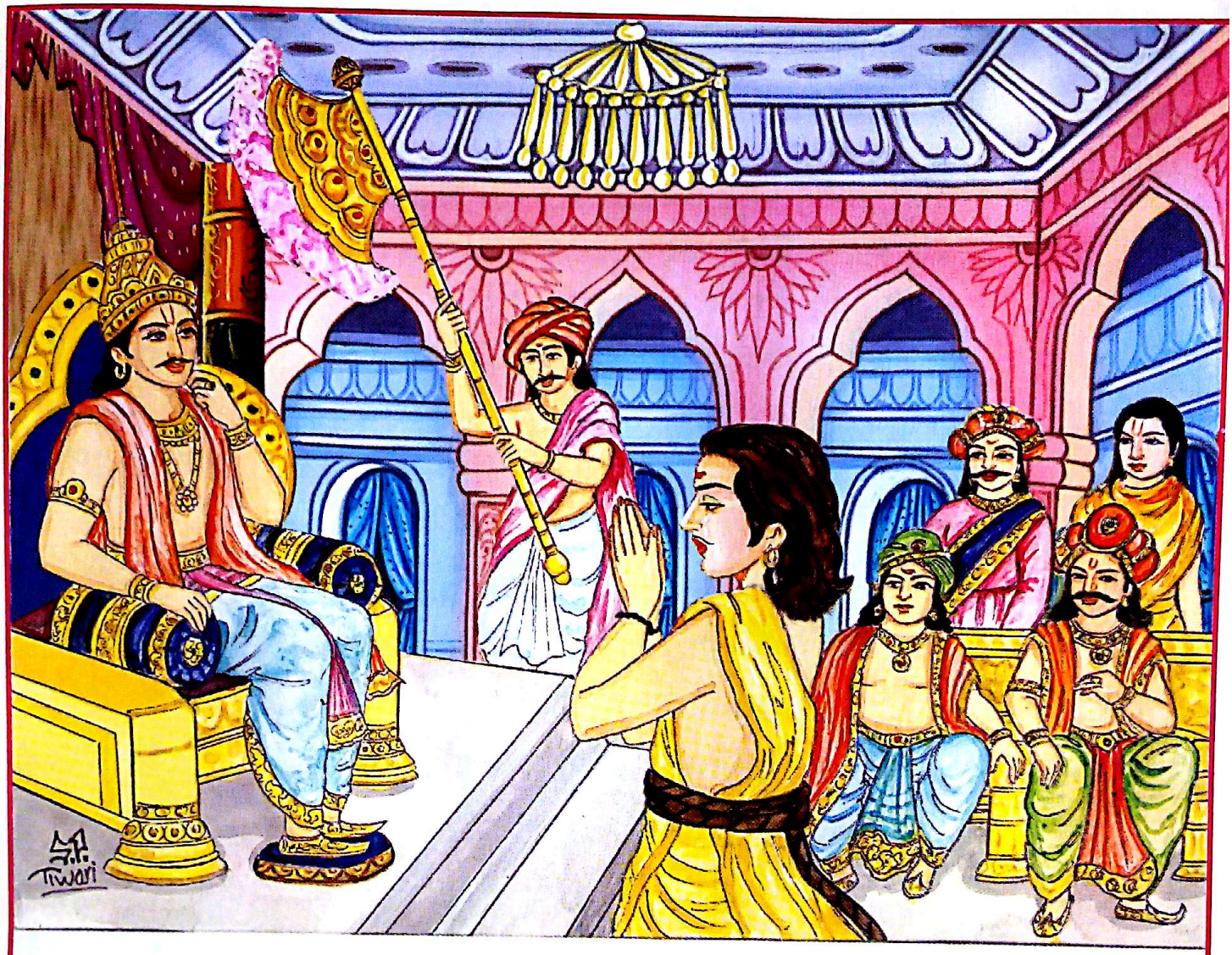

प्रातः कपिल को राजसभा में उपस्थित किया गया। राजा के पूछने पर कपिल ने बचपन में अध्ययनार्थ घर छोड़ने के प्रसंग से लेकर विद्याध्ययन, प्रेम-प्रसंग, गुप्त-विवाह, कपिला का गर्भ धारण करना, धन की आवश्यकता आदि सभी बातें अक्षर-अक्षर प्रारम्भ से अन्त तक सत्य-सत्य कह सुनाईं और बोला—''महाराज ! स्त्री-रूप के प्रेम जाल में फँसकर मैं आपका, गुरु का, माता का सबका अपराधी बन गया हूँ। आप जो चाहें मुझे दण्ड दीजिये।'' यह कहकर कपिल फूट-फूटकर रोने लगा।

उसके कथन के ढंग से तथा वेशभूषा से ही राजा समझ गए कि यह अपराधी नहीं है अपितु जो कुछ भी कह रहा है, सत्य है। उसकी दयनीय अवस्था पर राजा का दिल पसीज गया। वह बोले—''विप्रवर ! मैं प्रसन्न हूँ कि तुमने जो कुछ कहा, सत्य-सत्य कहा। तुम्हारी आवश्यकताओं को देखते हुए तुम्हें धन की प्राप्ति होनी ही चाहिए। माँगो, तुम्हें क्या चाहिए ? जितना चाहो माँग लो। अवश्य मिलेगा।''

Scanned by CamScanner

यह सुनकर कपिल एक बार तो हक्का-बक्का हो गया—'हें ! कहीं राजा मेरी परीक्षा तो नहीं ले रहे। दण्ड देने के स्थान पर पुरस्कार देना चाहते हैं। मौके का फायदा उठाना चाहिये।'

वह आया था दो माशा स्वर्ण की आशा में, धर दिया गया जेल में और अब स्थिति यह थी कि जो चाहे सो राजा से माँग ले। सोचने लगा—'क्या माँगू मैं ?' चिन्तन में पड़ गया—'जब राजाजी प्रसन्न हैं तो दो माशा स्वर्ण ही क्यों लूँ ? कुछ ज्यादा ही क्यों न माँगू ? कितना माँगू ? हम दो हैं, तीसरा आने वाला है। यदि कम माँगा तो पुनः जीवन में दुःख के दिन देखने पड़ेंगे, कम से कम सौ स्वर्ण-मुहर तो माँग ही लूँ।'

राजा ने उसे चिन्ता में मग्न देखा तो कहा—''ब्राह्मण-कुमार ! किस सोच में पड़ गये ? कोई जल्दी नहीं है। अच्छी तरह सोच लो। राजोद्यान में वृक्षों के नीचे बैठकर ताजी हवा में एक-दो घंटे विचारकर फिर वापस यहाँ आ जाना।''

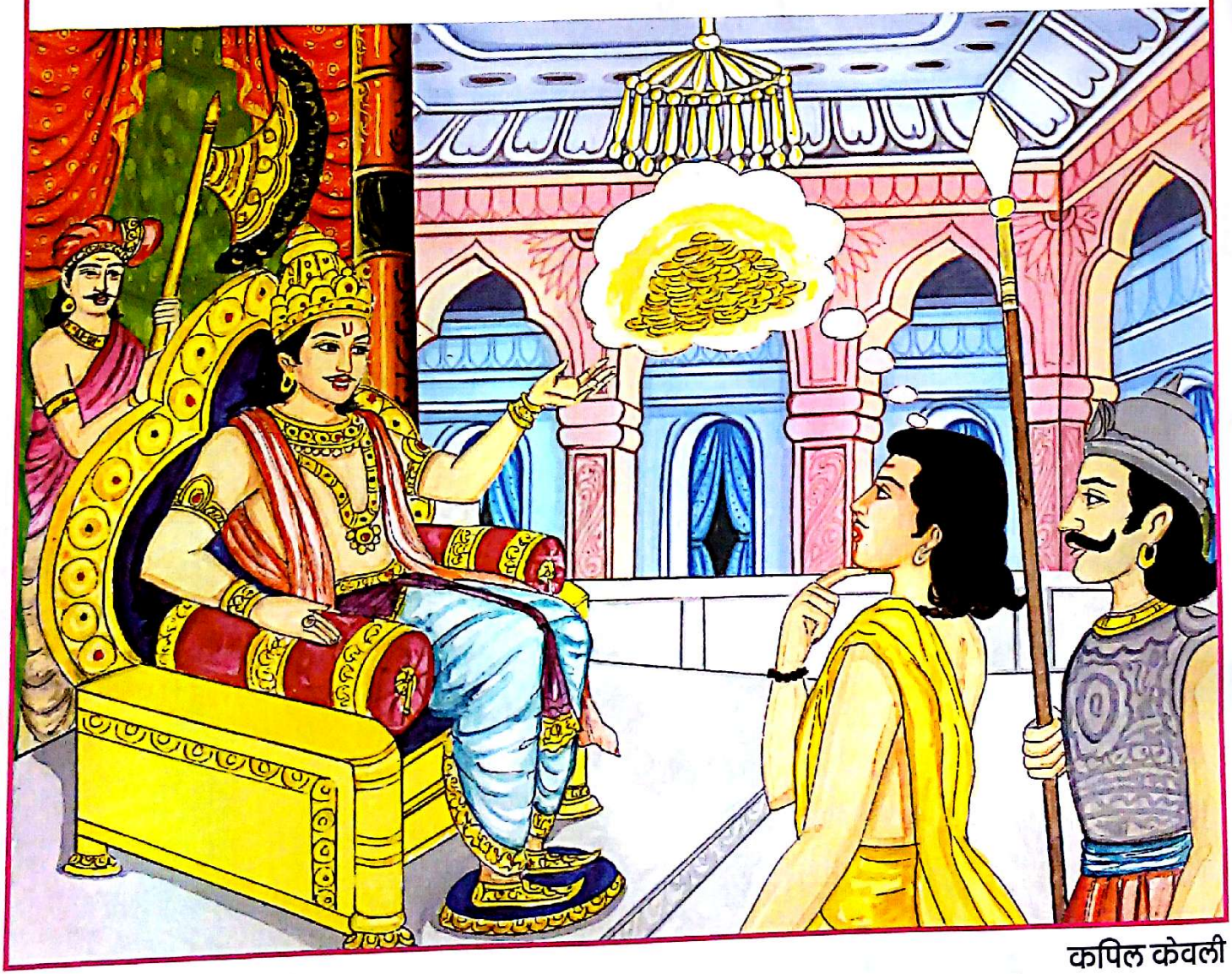

कपिल केवली

Scanned by CamScanner

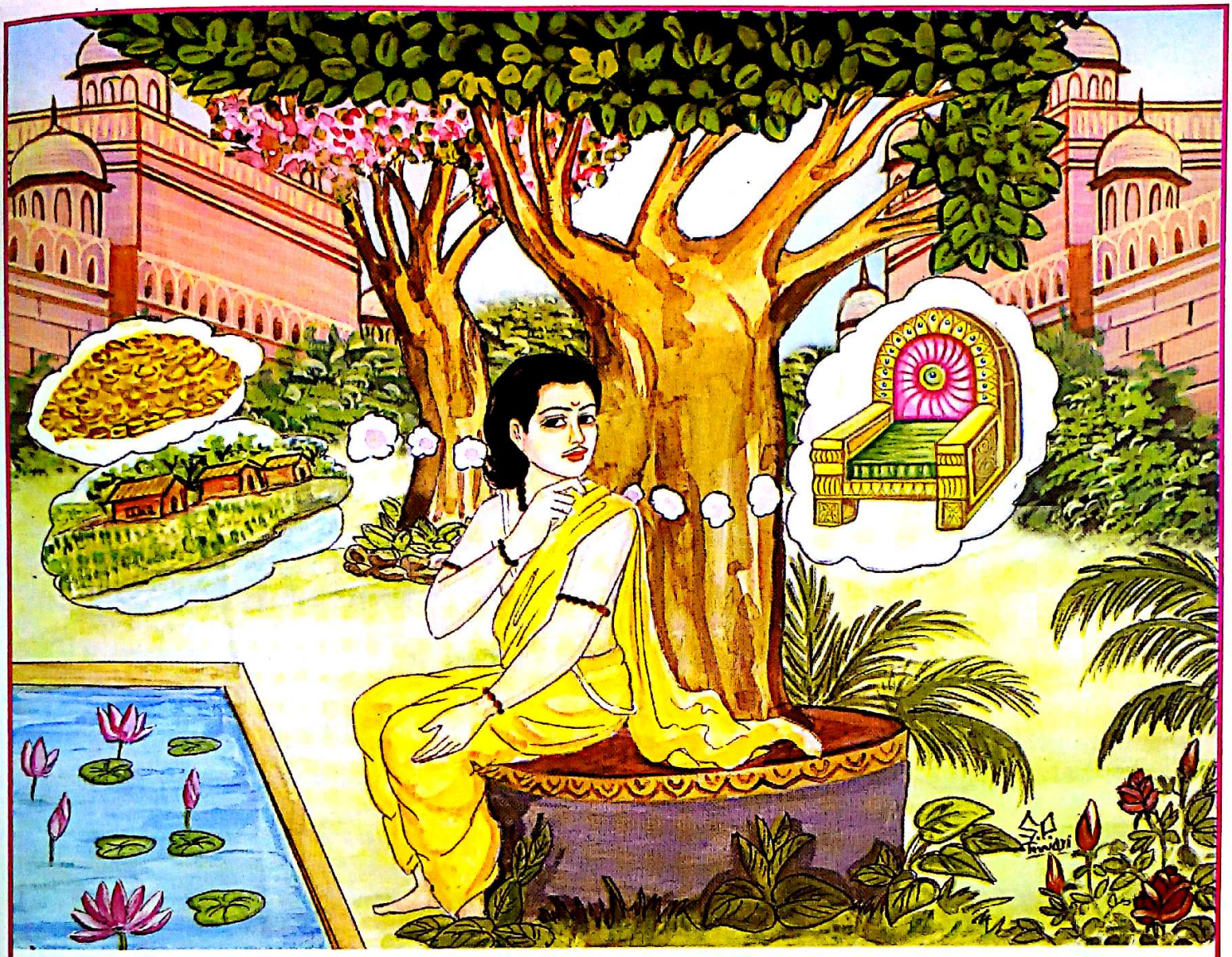

कपिल का चिन्तन

कपिल राजोद्यान में चला गया। घने वृक्ष के नीचे आराम से बैठ विचार करने लगा—'क्या सौ माशा सोना माँग लूँ....।' उसके मन से आवाज उठी—'सौ माशा भी कम ही रहेगा, जल्दी ही समाप्त हो जायेगा। जीवन तो अभी बहुत पड़ा है, क्यों न हजार माशा माँग लूँ।' फिर सोचा—'हजार से क्या होगा। संतान आने वाली है, उसके लिए वस्त्र आदि की व्यवस्था करानी होगी। सिर छिपाने के लिए एक घर भी चाहिए.....हजार माशा तो पूरी नहीं पड़ेगा। दस हजार माशा स्वर्ण माँग लेता हूँ।'

चिन्तन बढ़ता गया—'दस हजार माशा से क्या होगा ? थोड़ा ठाठ-बाठ तो होना ही चाहिये, एक पालकी भी आने-जाने के लिए होनी चाहिए, अतः करोड़ मोहरें माँग लेता हूँ।' फिर सोचा—'करोड़ हों या दस करोड़ स्वर्ण-मुद्रा, ये तो शनैः

Scanned by CamScanner

शनैः समाप्त होंगी ही। कोई ऐसा उपाय करना चाहिए कि जीवन-पर्यन्त आय होती रहे।'

कपिल की लोभवृत्ति बढ़ती जा रही है। ज्ञानी पुरुष कहते हैं कि शरीर का अन्त हो जाता है, परन्तु तृष्णाओं का कभी अंत नहीं होता। कपिल सोचता है—'आय का ऐसा साधन हो कि जिन्दगी भर कुछ करना न पड़े, ऐसा कुछ माँगना चाहिए। पाँच-सात गाँवों की जागीरी माँग लेता हूँ फिर तो कुछ कमी नहीं रहेगी। आराम से जिन्दगी निकल जायेगी। निरन्तर आय मिलने से सारी चिन्ताएँ समाप्त हो जायेंगी।'

तभी चिन्तन बदला—'कभी राजाजी का मन बदल गया तो ! राजा है, राजा का क्या भरोसा ? *क्षणे रुष्टा, क्षणे तुष्टा।* यदि नाराज हो गए तो छिन जायेगी यह जागीरी फिर हो जायेंगे हम दाने-दाने के मुहताज। तब क्या करूँ ? अच्छा, आधा राज्य माँग लेता हूँ। आधा मेरे पास, आधा राजाजी के पास। यह ठीक रहेगा पर कभी क्रोध में आ गये राजाजी तो आक्रमण कर देंगे मेरे राज्य पर, छीन लेंगे पुनः वह राज्य। मैं तो फिर वहीं का वहीं। पूरा राज्य ही क्यों न माँग लूँ ?'

कपिल का लोभ बढ़ा तो आधे राज्य के बाद पूरे राज्य को हड़प करने की इच्छा करने लगा। पूरा राज्य माँगने की कामना सुदृढ़ बन रही थी। तभी सहसा उसके विचारों को झटका लगा—'कैसा लोभी बन गया मैं ? आया था दो माशा स्वर्ण के लिए, पर अपने उपकारी का ही गला काटने का विचार कर बैठा। यह तृष्णा अनर्थों की जड़ है। यह तृष्णा उपकारी के उपकार को भी भुला देती है। यह तृष्णा जीव को जाने कहाँ से कहाँ भटका देती है।' कपिल को ऐसा लगा कि वह तृष्णा की नदी में डूब रहा है। कई बड़े-बड़े मगरमच्छ उसे खाने दौड़ रहे हैं। वह चौंक गया। उसने सोचा—'तृष्णा का कोई पार नहीं। यदि समूचे संसार का धन-वैभव भी मिल गया तो भी मेरा मन नहीं भरेगा।' यही सब सोचते-सोचते कपिल को जातिस्मरण ज्ञान हो गया।

अब वह मन की आँखों से अपना पिछला भव देखने लगा—''पिछले भव में सब कुछ छोड़कर मैंने संयम लिया था, पाप कर्मों का क्षय करने के लिए उत्कृष्ट करणी की थी। कहाँ वह करणी और कहाँ मेरा यह लोभ ? धिक्कार है

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

मुझे, मेरी आत्मा को। नहीं ! मुझे कुछ नहीं चाहिए। सुख धन से नहीं, मन से उपजेगा। मुझे तृष्णा छोड़कर सन्तोष धारण करना चाहिए, तभी मुझे शान्ति प्राप्त होगी।''

उसके हाथ एक शान्ति सूत्र आ गया–

ग्रहण करने में भय है, छोड़ने में शान्ति। त्याग बिना सुख नहीं।

कपिल शान्त-चित्त होकर उद्यान में पेड़ के नीचे ही ध्यानमग्न हो गया।

इधर जब काफी देर तक कपिल राजदरबार नहीं पहुँचा तो राजा ने कोतवाल को उद्यान में जाने का आदेश दिया–''जाओ ! उद्यान में बैठे ब्राह्मण को बुला लाओ। अब तक उसने सोच लिया होगा। उसको जो माँगना है, माँग ले। हम उसको देंगे।'' कोतवाल ने उद्यान में जाकर कपिल को राजा का सन्देश दिया–''विप्रवर ! राजा आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। जो माँगना है, माँग लो।''

Scanned by CamScanner

परन्तु कपिल अब क्या माँगता ? उसकी तो चाहत, तृष्णा पूर्णतः मिट चुकी थी। वह शान्ति से ध्यान में स्थिर बैठा रहा।

कोतवाल ने एक बार फिर कहा—''विप्रवर ! आप बहुत भाग्यशाली हैं जो महाराज आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। चलिये जल्दी चलकर जो माँगना हो माँग लीजिए।'' इस प्रकार बार-बार पुकारने पर भी जब कपिल ने उत्तर नहीं दिया तो कोतवाल ने वापस आकर राजा को बताया।

आश्चर्यचकित राजा उठकर स्वयं कपिल के पास आये और बोले—''विप्रवर ! आपको जो माँगना हो माँग लें। मैं अवश्य दूँगा।''

राजा को आया देखकर कपिल ने कहा—''महाराज ! अब मेरी कोई इच्छा शेष नहीं बची। मुझे वह धन मिल गया जिसे पाकर मनुष्य परमसुखी हो जाता है।''

Scanned by CamScanner

राजा ने आश्चर्य से पूछा—"कौन-सा धन मिल गया आपको ?"

कसिणं पि जो इमं लोयं, पडिपुण्ण दंलेज्ज इक्कस्स।
तेणावि से न संतुस्से इइ दुप्पूरए इमे आया।।

कपिल ने कहा—संतोष धन ! संयम धन ! राजन् ! धन-धान्य से भरा यह सारा विश्व भी यदि किसी एक को दे दिया जाये तो भी वह उससे सन्तुष्ट नहीं होगा। इतना दुष्पुर है यह लोभाभिभूत आत्मा। इच्छा को जीतना ही सुख का मार्ग है राजन् !"

राजा, मंत्री आदि सभी उपस्थित लोग यह सुनकर कपिल की उपलब्धि के आगे स्वयं को बौना अनुभव करने लगे। सभी के सिर श्रद्धा से झुक गये।

राजा की आज्ञा लेकर कपिल ने संयम अंगीकार किया और साधना में लीन हो गये। छह महीने की कठोर साधना से कपिल मुनि सर्वज्ञ-सर्वदर्शी केवली बन गये।

Scanned by CamScanner

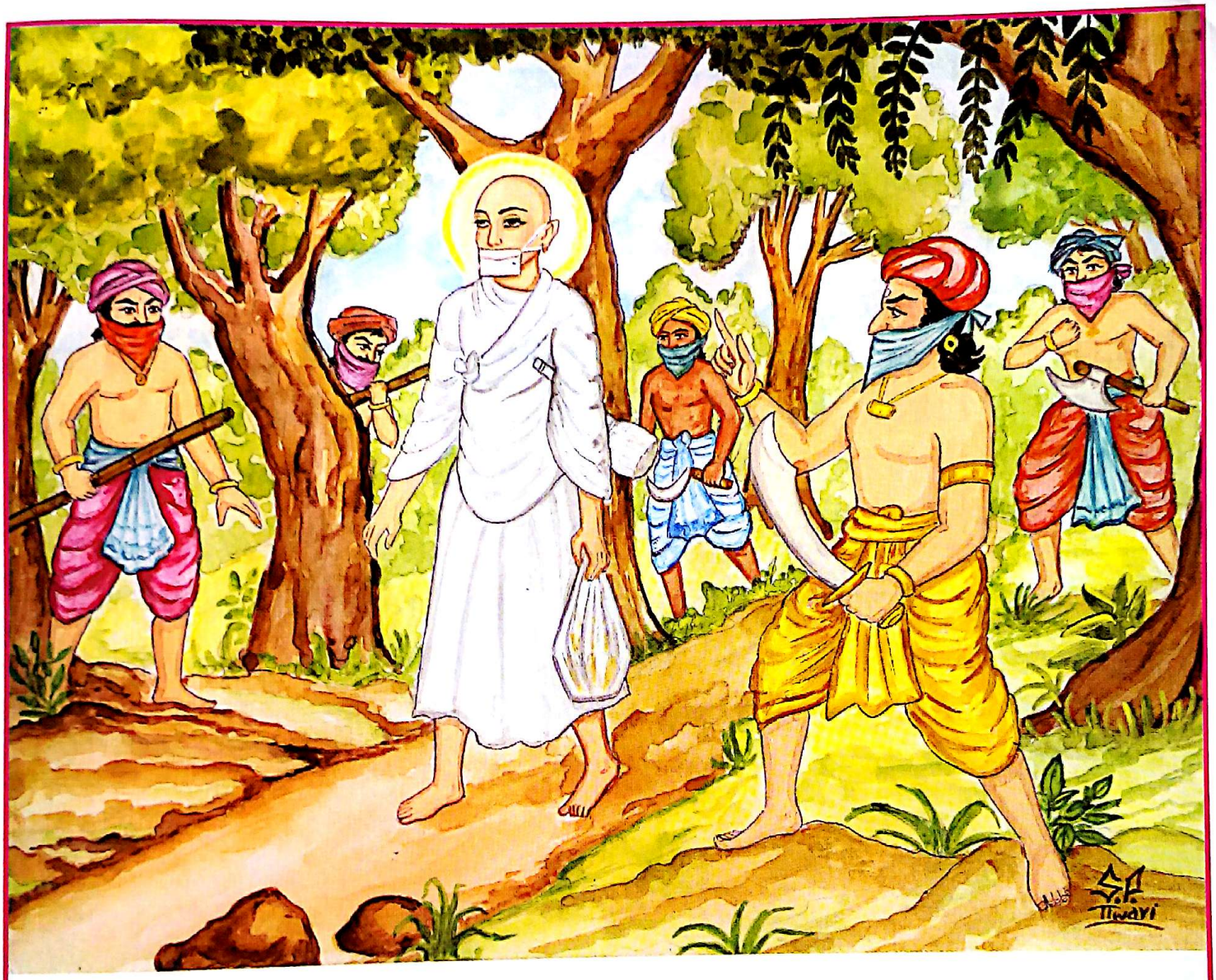

पाँच सौ चोरों को दिया प्रतिबोध

एक बार कपिल केवली श्रावस्ती नगरी से विहार करके जा रहे थे। मार्ग में घना जंगल था। चोरों की एक टोली ने कपिल मुनि को अकेले जाते देखा तो उन्हें लूटने के उद्देश्य से घेर लिया। चोरों का सरदार बलभद्र बोला—"पथिक ! तुम्हारे पास जो कुछ धन हो, निकालकर हमें दे दो।"

कपिल केवली ने चोरों को देखा। मन्द मुस्कराहट के साथ बोले—"मैं भी धन की खोज में निकला था और तुम भी धन के कारण जंगल में भटक रहे हो। फर्क सिर्फ इतना है कि मैंने अपनी आत्मा के भीतर छुपे उस असीम धन को पा लिया और तुम क्षणिक वैभव धन को पाना चाहते हो।"

चोरों के सरदार बलभद्र ने उत्सुकतापूर्वक पूछा—"वह कौन-सा धन है, हमें भी बताओ।"

Scanned by CamScanner

कपिल मुनि–''उस धन को पाने के बाद तीनों लोकों का वैभव भी तुच्छ लगने लगता है।''

सरदार–''श्रमण ! तुम तो बड़ी मनोरंजक बातें करते हो। चलो, तुम्हारे साथ हम भी उस धन को पाना चाहते हैं।''

कपिल केवली ने अपने ज्ञानबल से देख लिया कि सभी जीव (चोर) सुलभबोधि हैं। वे उनसे बोले–''तुम लोग शान्तिपूर्वक सुनो, मैं तुम्हें सुख के बारे में सुनाता हूँ।'' और मधुर स्वर में गाने लगे–

अधुवे असासयंमि संसारंमि दुक्खपउराए।
किं नाम होज्ज तं कम्मयं जेणाऽहं दोग्गइं न गच्छेज्जा।।

गाते-गाते सारा वातावरण संगीतमय हो गया। संगीत की स्वर-लहरियों में भाव-विभोर चोर अपने-आपको भी भूल गये। वे भी साथ-साथ गाने लगे। कपिल मुनि ने गीत का अर्थ बताया–"इस अधुव्र, चंचल और दुखों से भरे नाशवान

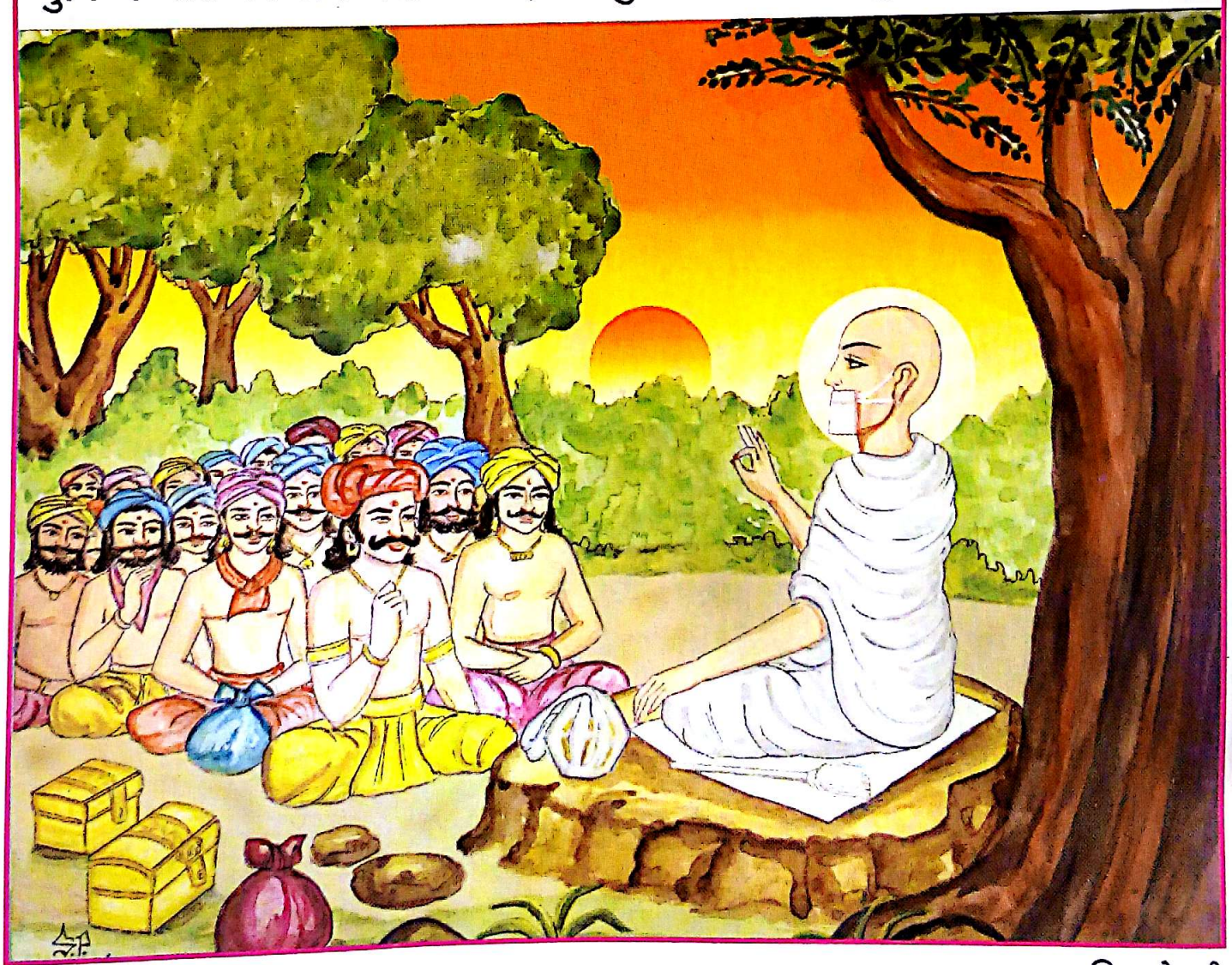

Scanned by CamScanner

संसार में चारों ओर दुःख ही दुःख है। कौन-सा कर्म है जिसके कारण मैं दुर्गतियों में, नरक आदि गतियों में न जाऊँ ?''

सभी चोरों के मन में एक साथ प्रश्न प्रस्फुटित हुआ—''वह कौन-सा कर्म है, जिससे हम दुर्गतियों में न जायें ?''

कपित मुनि ने समझाया—''दूसरों का धन लूटना, उनको कष्ट पहुँचाना, उनकी सुख-शान्ति छीनना तथा हिंसा आदि कर्म दुर्गतियों के मार्ग हैं। सद्गति में जाने के लिये इन्हें छोड़ना होगा। क्षणिक वैभव रूपी धन को पाने के लिये जन्म-जन्मान्तर तक कर्मरूपी मैल आत्मा पर चढ़ाकर उसे दुर्गति में मत खींचो। संसार के भौतिक सुखों को त्यागने पर ही आत्मा को असीम आनन्द की प्राप्ति होगी, चिरकाल तक सुख मिलेगा।''

Scanned by CamScanner

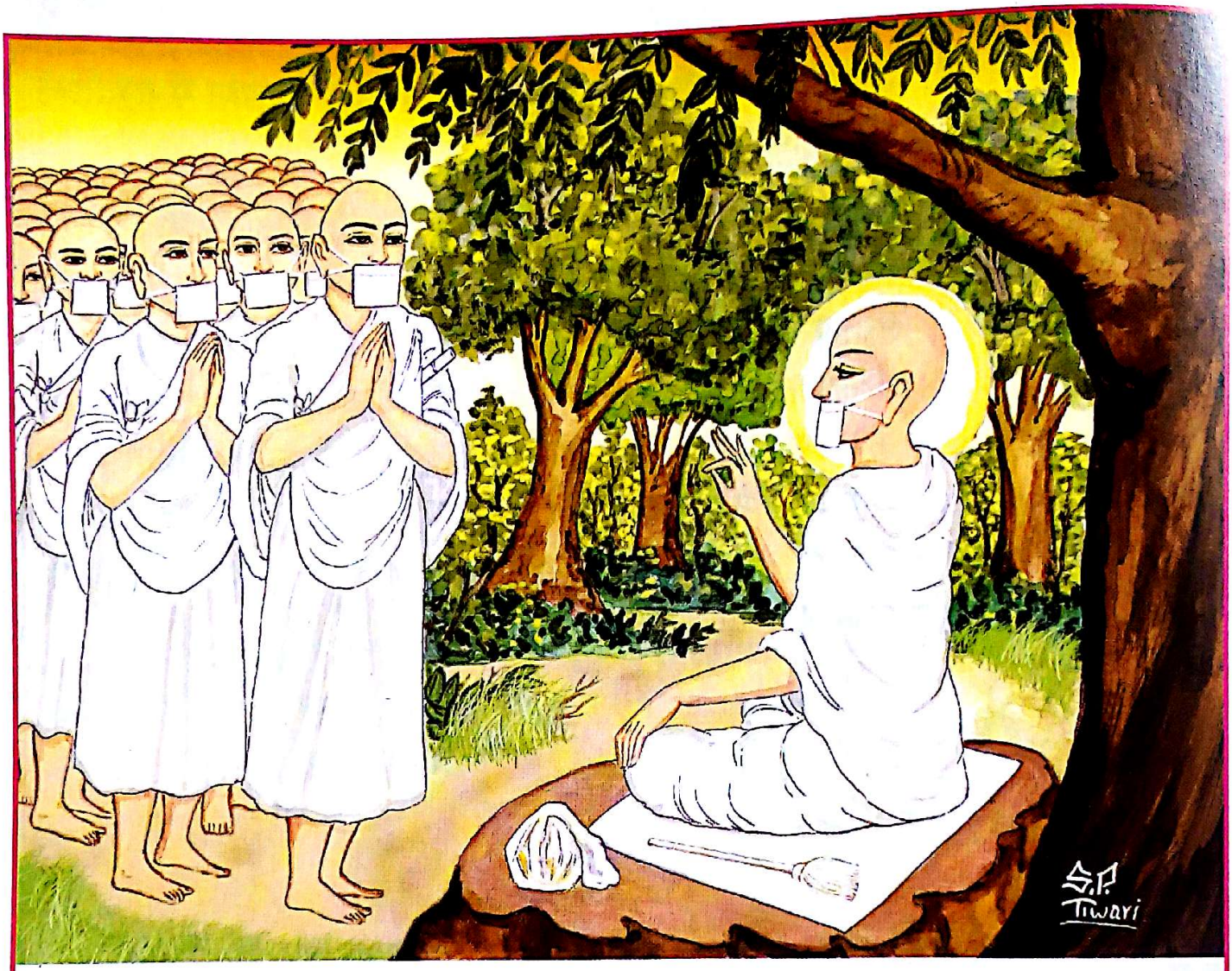

मुनि के मार्मिक उपदेश सुनकर सभी चोरों को वैराग्य उत्पन्न हो गया और वे अपना चौर्य कर्म, धन परिवार आदि छोड़कर कपिल मुनि के शिष्य बन गये और दीक्षित हो गये। उन्होंने संसार की तृष्णा से बचने का सच्चा मार्ग पा लिया।

केवली कपिल मुनि से प्रतिबुद्ध चोरों ने संयम-साधना कर अपना जीवन सफल किया। कपिल मुनि उन्हें प्रतिबोध देकर आगे बढ़ गये।

■■

चोरों को दिया मार्मिक उपदेश उत्तराध्ययन सूत्र के आठवें अध्ययन में दिया गया है, जिस पर "बड़ी साधु वन्दना सचित्र प्रवचन" भाग-1 में बहुत सुन्दर विवेचना की गई है।

● *डिजाइनिंग* : संजय सुराना ● *प्रोसेसिंग* : अरु ग्राफिक्स ● *प्रिण्टिंग* : पद्मोदय प्रकाशन, आगरा

Scanned by CamScanner

श्री जयमल जैन पार्श्व पद्मोदय फाउण्डेशन चेन्नई के ट्रस्टीगण

वंश परम्परागत ट्रस्टी :

अध्यक्ष : श्री ज्ञानचन्द जी मुणोत, चेन्नई
उपाध्यक्ष : श्री भंवरलाल जी लोढ़ा, चेन्नई
उपाध्यक्ष : श्री ए. एन. प्रकाशचन्द जी बोहरा, चेन्नई
कोषाध्यक्ष : श्री नरेन्द्रकुमार जी मरलेचा, चेन्नई
मंत्री : श्री नवरतनमल जी गादिया, चेन्नई

आजीवन ट्रस्टी

- श्री चेनराज जी गोटावत, बैंगलोर
- श्री धनराज जी बाफणा, बैंगलोर
- श्री धरमचंद जी लूंकड, चेन्नई
- श्री उत्तमचन्द जी बोकड़िया, चेन्नई
- श्री शान्तिलाल जी मेहता, चेन्नई
- श्री विजयसिंह जी पींचा, चेन्नई
- श्री ललेशकुमार जी कांकरिया, चेन्नई
- श्री गौतमचन्द जी रूणवाल, चेन्नई
- श्री विमलचंद जी बैताला, चेन्नई
- श्री उत्तमचंद जी बागमार, इरोड़
- श्री निर्मलचंद जी कांकरिया, जोधपुर
- श्री महावीरराज जी बोहरा, पिपलीयां कलां
- श्री रमेशकुमार जी सियाल, बैंगलोर
- श्री विजयराज जी छाजेड़, सिकन्द्राबाद
- श्री एस. गौतमचन्द जी श्रीश्रीमाल, सिकन्द्रावाद
- श्री सज्जनराज जी कांकरिया, सिकन्द्राबाद
- श्री शान्तिलाल जी कोठारी, हैदराबाद
- श्री बाबूलाल जी कांकरिया, हैदराबाद
- श्री उगमराज जी भंसाली, हैदराबाद

卐 चमत्कारी जय जाप 卐

पूज्य जयमल जी हुआ अवतारी, ज्यांरा नाम तणी महिमा भारी।
कष्ट टले मिटे ताव तपो, पूज्य जयमल जी रो जाप जपो।।
पूज्य नामे सब कष्ट टले, वली भूत-प्रेत पिण नाय छले।
मिले न चोर हुवे गुप-चुपो, पूज्य जयमल जी रो जाप जपो।।
लक्ष्मी दिन-दिन बढ़ जावे, वली दुःख नेड़ो तो नहीं आवे।
व्यापार में होवे बहुत नफो, पूज्य जयमल जी रो जाप जपो।।
अड़ियो काम तो होय जावे, वली बिगड़्यो काम भी बण जावे।।
भूल-चूक नहीं खाय डफो, पूज्य जयमल जी रो जाप जपो।।
राज-काज में तेज रहे, वली खमा-खमा सब लोक कहे।
आछी जागा जाय रूपो, पूज्य जयमल जी रो जाप जपो।।
पूज्य नाम तणो जो लियो ओटो, ज्यारे कदे नहीं आवे टोटो।
घर-घर बारणे काय तपो, पूज्य जयमल जी रो जाप जपो।।
एक माला नित्त नेम रखो, किणी बात तणो नहिं होय धखो।
खाली विमाण अरु टलेजी सपो, पूज्य जयमल जी रो जाप जपो।।
स्वभक्त तणी प्रतिपाल करे, मुनिराम सदा तुम ध्यान धरे।
कोई परतिख बात मती उथपो, पूज्य जयमल जी रो जाप जपो।।
पूज्य नाम प्रताप इसो जबरो, दुख कष्ट-रोग जावे सगरो।
केई भवां रा कर्म खपो, पूज्य जयमल जी रो जाप जपो।।

नोट—इस चमत्कारी जय जाप को नित्य पढ़ने से सम्यक्त्व सुदृढ़ बनता है।

पुस्तक प्राप्ति स्थान :

श्री जयमल जैन पार्श्व पद्मोदय फाउण्डेशन, चेन्नई
78, Millers Road, Kilpauk, Chennai-600 010
Ph. : 26422308, 26422309

श्री जय ध्वज प्रकाशन समिति (शाखा-कार्यालय)
श्रुताचार्य चौथ स्मृति भवन, 39, विनोद नगर, ब्यावर (राज.)

श्री जयमल जैन पार्श्व-पद्मोदय माउण्ट आबू शिविर ट्रस्ट
C/o, श्री चैनराज जी गोटावत, एम. सी. गोटावत इलेक्ट्रीकल्स,
वी. एस. लेन, चिकपेट, बैंगलोर-560 053. फोन : 26571898, 26577455

Scanned by CamScanner

स्वाध्याय-ध्यान प्रणेता, डॉ. पदमचन्द्र जी म. सा. के प्रवचन एवं संपादित पुस्तकें

सचित्र बड़ी साधु वन्दना भाग- 1-5

आचार्य श्री जयमल जी म. की अमर रचना बड़ी साधु वन्दना की एक-एक कड़ी पर विस्तृत विवेचन करने वाले प्रवचन।
(प्रवचनकार : डा. पदमचन्द्र जी म. सा.)
रंगीन चित्रों द्वारा प्रत्येक गाथा का सजीव चित्रण किया गया है।

प्रत्येक भाग पक्की बाइंडिग युक्त 400 पृष्ठों का है । प्रत्येक भाग का मूल्य : 350/- है
पाँचों भागों को एक साथ मंगाने पर मूल्य : 1250/-

जय ध्वज

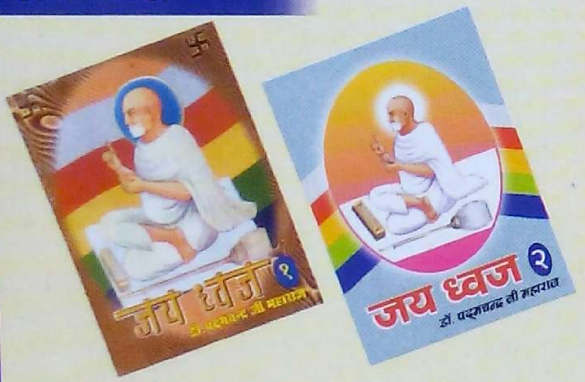

एक भवावतारी आचार्य श्री जयमल जी म. सा. का सम्पूर्ण जीवन चरित्र पाँच भागों में प्रकाशन की योजना एक भाग प्रकाशित हो चुका है। दूसरा भाग प्रेस में है।
प्रत्येक भाग का मूल्य : 350/- है

बड़ी साधु वन्दना सचित्र कथाऐं

बड़ी साधु वन्दना में दिये गये ऐतिहासिक चरित्रों के जीवन पर रंगीन सचित्र कथायें। कुल 108 भाग प्रकाशन की योजना
प्रत्येक भाग का मूल्य : 25/- है।

एक भवावतारी आचार्य श्री जयमल जी म. सा. का संक्षिप्त जीवन चरित्र एवं स्वाध्याय हेतु नमोकार मंत्र, जयजाप, पच्चीस बोल स्तोक संग्रह इत्यादि प्रकाशित साहित्य

पुस्तकें मंगाने के लिऐ निम्न पते पर अपना आर्डर भेजें।

श्री जयमल जैन पार्श्व-पद्मोदय फाउण्डेशन, चेन्नई

78, MILLERS ROAD, KILPAUK, CHENNAI - 600 010. CELL : 94441 43907, 9841047607

Scanned by CamScanner